श्री कैलादेवी इतिहास
आरती
लाँगुरिया
सहित

असली प्राचीन

श्री कैलादेवी इतिहास

देवी के पदार्पण और शक्ति पीठ की प्रतिष्ठा का प्राचीन उल्लेख, माता का चमत्कार दानव के संहार की लीला, कैला देवी शतक, श्री कैला देवी की झाँकी, श्री कैला देवी चालीसा, श्री दुर्गा चालीसा एवं विन्ध्येश्वरी चालीसा तथा स्तुति आरती और लाँगुरियों सहित प्रसिद्ध पुस्तक

(दर्शनार्थियों और यात्रियों के लिये पालनीय नियम पूजा-प्रसाद और पोशाक की जानकारी सहित)

लेखक : मूलसिंह जादौन भागीरथपुरवाले
कैलादेवी (करौली) राज.

सम्पादक: के. एन. गुप्ता

प्रकाशक :

श्री वन्दना बुक डिपो,

चौक, गुड़हाई बाजार, मथुरा

नवीन संस्करण ☎ 2403493 मूल्य 15/-

प्रकाशकीय

राजस्थान में करौली एक जिला है । यहाँ से 25 किमी. की दूरी पर एक शक्तिपीठ कैला देवी नाम से है । कैलादेवी करौली के यदुवंशी शासकों की कुलदेवी है । मंदिर की देखभाल, प्रबन्ध और मेला पर होने वाली व्यवस्थाएँ आज भी इन्हीं करौली के शासकों के ट्रस्ट द्वारा होती है । इसी से यह मन्दिर करौली वाली देवी के नाम से सुविख्यात है । प्रतिमास यहाँ अमावस से लेकर नवमी तक हजारों दर्शनार्थी पहुँचते हैं जिनमें बहुत बड़ी संख्या उन भक्तों की होती है जो नियम से दर्शन-पूजा को पहुँचते हैं ।

चैत्र और आश्विन, विशेषत: चैत्र माह की नवरात्रि के दिनों में तो अपार जन-समूह एकत्र होता है । लाखों जात देने वाले परिवार यहाँ पहुँचकर माता के दर्शन-पूजा करते हैं । यहाँ दोनों ही नवरात्रियों के समय विशालतम मेला लगता है । सैकड़ों दुकानें, पूजा के सामान पुस्तकों तथा खाने-पीने और अन्य नित्य उपयोगी वस्तुओं की लगती हैं। सहस्त्रों यात्री-वाहन निरन्तर मेले के समय यहाँ आते-जाते देखे जाते हैं ।

हमारे यहाँ से प्रकाशित धार्मिक, जन-साहित्य की बिक्री यहाँ होती रहती है । माँ के भक्तों की माँग देखकर श्री मूलसिंह ने जो कि माँ के अनन्य भक्त हैं, इस पुस्तक के हेतु परिश्रम करके विषय-सामिग्री एकत्र की । जिसका परिणाम आज यह प्रकाशित पुस्तक आपके सामने है ।

इस पुस्तक के जितने भी संस्करण प्रकाशित होते रहे हैं, सभी में कुछ न कुछ परिवर्द्धन संशोधन होता रहा है । ताकि पुस्तक अधिक से अधिक उपयोगी सिद्ध हो सके । इसमें श्री कैलादेवी शतक, श्री कैला माँ की झाँकी और छोटे अक्षरों को मोटे रूप में बदला है ताकि स्त्री-पुरुष और कम पढ़े लिखे भी इसका लाभ उठा सकें ।

-प्रकाशक

लेखक के दो शब्द

मैं न तो लेखक हूँ, न कोई विद्वान । बस, मातेश्वरी का मैं एक भक्त हूँ, सेवक हूँ । माताजी के सान्निध्य में, उनकी शरण में पड़ा रहकर अपनी जीविका के लिये, अपने परिवार की उदर पूर्ति के लिये यात्री एवं दर्शनार्थियों को माताजी के दर्शन-पूजा के हेतु उनके चित्र एवं धार्मिक साहित्य उपलब्ध कराता हूँ और इस सेवा से मुझे जो धन-सहयोग मिलता है, उससे अपनी जीविका चलाता हूँ ।

राज-राजेश्वरी माँ कैलादेवी की महिमा का वर्णन करना जब सुर-मुनि जनों के वश से बाहर की बात है तब मैं एक साधारण अल्पबुद्धि वाला व्यक्ति माँ की असीम महिमा को अपने शब्दों में व्यक्त कैसे कर पाऊँगा । फिर भी माताजी की महती अनुकम्पा और प्रकाशक महोदय की प्रेरणा पर मैं इस पुस्तक को प्रस्तुत करने का साहस कर रहा हूँ । प्रचलित लोक-वाणियों, 'प्राचीन पुराण ग्रन्थों तथा गुसांइयों आदि वृद्धजनों से सुनकर इस 'इतिहास' को लिखा गया है । इसके कई संस्करण हो चुके हैं, संशोधन, परिवर्द्धन करके मैं इस पुस्तक को बराबर सुधारने का प्रयत्न करता रहा हूँ । इस बार यह बड़ा संस्करण मोटे अक्षरों में कुछ परिवर्तन-परिवर्द्धन के साथ प्रस्तुत किया गया है । विश्वास है, यह और भी अधिक पसन्द किया जायेगा ।

-मूलसिंह जादौन

कैलादेवी (करौली) मन्दिर में दर्शनार्थियों के लिये पालन करने योग्य नियम

(1) यात्रियों को स्नानादि से पवित्र होकर तथा स्वच्छ वस्त्रों को पहिनकर दर्शन करने मन्दिर में जाना चाहिए ।

(2) दर्शन-पूजा-अर्चना पंक्ति बद्ध होकर करना चाहिए । पहले से पहुँचे हुए भाई-बहिनों को धक्का-मुक्की करके उनकी पूजा-अर्चना में व्यवधान नहीं डालना चाहिए ।

(3) मन्दिर में तहमद, लुंगी, मौजे तथा अभद्र पोशाक पहिन कर नहीं जाना चाहिए ।

(4) दर्शनार्थियों को शराब आदि का नशा नहीं करना चाहिए और न शराब पीकर मन्दिर में ही जाना चाहिए ।

(5) मन्दिर में बहुमूल्य आभूषण पहिनकर तथा रुपये लेकर नहीं जाना चाहिए तथा बाहर छोड़े गए सामान की देखरेख अपने जानकार व्यक्ति को ही सौंपना चाहिए ।

(6) मन्दिर में भीड़ होने पर जेब कतरों, उठाईगीरों आदि से सावधान रहकर दर्शन करना चाहिए ।

(7) मन्दिर और मन्दिर के बाहर प्रांगण में स्वच्छता बनाए रखने के लिए कागज-पत्ते तथा अन्य गन्दगी करने वाले छिलके आदि यहाँ-वहाँ न डालकर निश्चित स्थान पर ही डालना चाहिए ।

(8) रेडियो, कैमरा, शस्त्रास्त्र, लाठी, बल्लम आदि लेकर मन्दिर में नहीं जायें । मन्दिर में फोटो खींचने की मनाही भी है ।

(9) मंदिर में अपने साथ भजन-पूजन की सामग्री के अलावा अन्य सामान, असबाव आदि लेकर नहीं आये।

(10) मन्दिर में माताजी के जयकारे के अलावा कोई शोर-शराबा, गाली-गलौज नहीं करना चाहिए।

(11) मन्दिर के अन्दर पाँव फैलाकर बैठना, लेटना और माताजी की ओर पीठ करके नहीं बैठें और न बैठने दें ।

(12) मन्दिर के अन्दर और बाहर गन्दे गाने नहीं गाने चाहिए ।

(13) माता-बहिनों के बीच पुरुषों को नहीं जाना चाहिए और न नाचना चाहिए ।

(14) रजस्वला स्त्रियों को मन्दिर में नहीं जाना चाहिए ।

(15) महिलाओं और बच्चों के प्रति अभद्र व्यवहार नहीं करना चाहिए। भीड़ होने पर उन्हें सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए । जहाँ तक हो सके महिलाओं और बच्चों को दर्शन के समय आगे रखना चाहिए ।

(16) मन्दिर के अन्दर बीड़ी-सिगरेट नहीं पीना चाहिए ।

(17) मन्दिर में दीपक, धूपबत्ती, अगरबत्ती जलाते समय अन्य यात्रियों से बचाकर जलाऐं तथा निश्चित स्थान पर ही जलाकर रखें ।

(18) यात्रियों व दर्शनार्थियों को चाहिए कि वे मन्दिर के सभी नियमों का पालन करें और अपने को माता का सेवक समझकर मन्दिर की व्यवस्था में सहयोग देना चाहिए । श्रद्धा एवं भक्ति सहित शुद्ध पवित्र मन से माँ के दर्शन करने जाना चाहिए । क्योंकि भक्ति में ही शक्ति और सिद्धि है ।

पूजा-सामिग्री एवं चढ़ाने की जानकारी

(1) माता के प्रसाद एवं चढ़ावे की थाली सेवकों को देकर भोग लगने पर वापिस ले लेवें । अपनी थाली एवं प्रसाद का स्वयं ध्यान रखकर अपनी ही थाली लेवें, दूसरे यात्री की न लेवें ।

(2) पूजा की सामग्री, नारियल चढ़ावा आदि सेवकों को चढ़ाने को देवें मन्दिर में फेंके नहीं । नारियल यदि फोड़कर चढ़ाना है तो बाहर बने कुंडो में ही फोड़ें । अन्दर मन्दिर में न फोड़े ।

(3) प्रात: एवं सायंकाल की आरतियों के समय यात्रियों को मन्दिर में उपस्थित रहना चाहिए और जब तक आरती होती रहे, मन्दिर में यथा स्थान खड़े रहकर दर्शन-अर्चना करते रहें । आरती के समय शोर-शराबा करना, जयकारे लगाना, मन्दिर में घूमना, धक्का-मुक्की करना अथवा आगे पहुँचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए ।

(4) दीप दान का दीपक निश्चित स्थान पर ही रखें ।

(5) विशेष पूजन अर्चन, होम आदि करना हो तो मन्दिर के अन्दर न करें । इसके लिये मन्दिर के दाहिनी ओर का स्थान प्रयोग में लायें ।

(6) माताजी के लिये विशेष दान देने या पोशाक चढ़ाने छप्पन भोग नवरात्रि पाठ, फूल, बंगला, जागरण आदि के लिए मन्दिर के अधिकारियों से ही सम्पर्क करें । अन्य लोगों के बहकावे में न आएँ । पूजा-उपासना के कार्य अपनी सामर्थ्यानुसार करना चाहिए ।

माताजी के लिये पोशाक की जानकारी

मन्दिर में माँ श्री कैलादेवी तथा माँ चामुण्डा देवी दोनों के लिये अलग-अलग दो पोशाकें बनती हैं । दो ओढ़नी-साढ़े तीन मीटर लम्बी और पौने दो मीटर चौड़ी, दो लहँगा-लम्बाई घेर की तीन मीटर, चौड़ाई निचाई एक मीटर, एक पिछवाई-लम्बाई ढाई मीटर और चौड़ाई डेढ़ मीटर पाँच दुपट्टे-लम्बाई आधा मीटर, चौड़ाई चौथाई मीटर (लांगुरिया, भैरों, गणेश, बहोरा व शेराजी के लिये) ।

नोट-(1) पिछवाई सफेद और काले रंग के अलावा किसी भी रंग की हो सकती है ।

(2) लहँगों में नीचे की ओर एक मीटर गोटा या किरन लगवाई जा सकती है ।

(3) ओढ़नी पर गोटा आदि का खूब अच्छा काम होना चाहिए ।

श्रृंगार का सामान

16 चूड़ी, 2 शीशा, 2 कंघा, 2 चुटीले, 2 काजल की डिब्बी नाखूनी महावर, मेंहदी, बिन्दी, रोली, चावल, सिन्दूर, कलाया, तेल, चमेली 100 ग्राम, फूल माला हार, ध्वजाएँ छड़ी सहित-ये सभी वस्तुएँ स्वेच्छानुसार ली जाती हैं ।

मन्दिर में दर्शनों का समय

प्रात: 4 बजे से 4.30 बजे तक मंगला के दर्शन, तत्पश्चात् गर्मी के दिनों में 5.30 और जाड़ों में 6 बजे तक धूप व आरती 7.30 । श्रृंगार के दर्शन 8 बजे । राजभोग का समय 11.15 । दोपहर 12 बजे से 1 बजे तक माताजी के विश्राम का समय है ।

इसके बाद दोपहर 1 बजे से 8 बजे रात्रि तक दर्शन होते रहते हैं । सायं 7.20 मैया की संध्या आरती का समय है । यहाँ हलुवा का भोग लगता है । नवदुर्गाओं में अथवा किसी भक्त सेवक के कराने पर माता का जागरण होता है । जागरण में प्रवेश पाने के लिए निश्चित भेंट चढ़ाकर रसीद लेनी पड़ती है । एक रसीद से केवल दो व्यक्तियों को प्रवेश मिलता है । दिवाली से बसन्त पंचमी तक के दिनों में मंगला दर्शन नहीं होते हैं ।

आरती दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी, मैया जय आनन्द करणी
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी । टेक ।
माँग सिंदूर बिराजत टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोऊ नैना चंद्र बदन नीको ।जय०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला कंठन पर साजै । जय०
केहरि वाहन राजत, खडग खप्पर धारी ।
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुख हारी ।जय०
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ।जय०
शुंभ निशुम्भ विडारे महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना निशि दिन मदमाती ।जय०
चण्ड-मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ।
मधु-कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे ।जय०
ब्रह्माणी-रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम-निगम बखानी तुम शिव-पटरानी ।जय०
चौंसठ योगिन मंगल गावत नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ।जय०
तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता सुख-सम्पति करता ।जय०
भुजा चार अति शोभित वर मुद्राधारी ।
मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ।जय०
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती ।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योती ।जय०
श्री अंबे जी की आरती जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानंद स्वामी सुख सम्पति पावै ।जय०

कैला माता

'ततः कलियुगे प्राप्ते कैलो नामा भविष्यति ।
मम भक्तस्तस्य नामना भाव्या कैलेश्वरीत्यहम् ॥

स्कन्द पुराण में उपर्युक्त वचन देवी के हैं । द्वापर में भीमसैन की स्तुति पर प्रसन्न होकर माँ ने कहा था ''कलिकाल में लोक कल्याणार्थ मेरा प्रादुर्भाव होगा और मुझे 'कैलेश्वरी' नाम से जाना जायेगा । मैं उस समय अपनी 'कला' रूप में अवतरित होने से ''कैला'' कहाऊँगी । इस प्रकार 'कैला' भगवती का पौराणिक नाम सिद्ध होता है । इस विषय में पौराणिक आख्यान तथा इस देवी के प्रादुर्भाव का कारण आदि का वर्णन विस्तार से आगामी पृष्ठों में उपलब्ध है ।

एक सिद्ध शक्ति पीठ

जिला करौली का कैला देवी मन्दिर

मध्य-प्रदेश की सीमा से लगकर बहती हुई चम्बल नदी से लगभग 30 किमी. उत्तर में करौली जनपद में अवस्थित कैला माता का मन्दिर उत्तर भारत के सिद्ध शक्तिपीठों में से एक है ।

सन् 1800 ई. के लगभग निर्मित कैला देवी माँ का यह सिद्ध पीठ करौली राज्य होने के कारण इन्हें करौली वाली माता या मैया भी कहा जाता है । करौली स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व एक रियासत थी जो अब तत्कालीन छोटी-बड़ी अन्य रियासतों के साथ राजस्थान में विलीन हो गई है । राजस्थान में करौली जनपद जिला बन गया है । यहाँ से 25 किमी. दक्षिण में कैला ग्राम के समीप

घोर बियावान जंगल में पर्वत श्रेणियों से घिरे त्रिकूट नामक पर्वत पर 'कैलादेवी' का दिव्य मन्दिर है। करौली के शासकों ने इस मन्दिर के निर्माण-पुनर्निर्माण और प्रबन्ध में अपनी मुख्य भूमिका निभाही है और आज भी इसे संरक्षण दिये हुए हैं, इसी से २५ किमी. की लम्बी दूरी होने पर भी इसे 'करौलीवाला मन्दिर' कहा जाता है। इसका निर्माण करौली नरेश महाराज गोपालसिंह के शासक काल में हुआ और परवर्ती नरेशों द्वारा इसका व्यापक विकास होता रहा। मन्दिर के दक्षिण-पूर्व में विशाल बियावान जंगल है। इसे कैलादेवी अभयारण्य कहा जाता है। इसमें शेर, चीते, रीछ, हिरन आदि वन्यजीवों को जब-तब विचरण करते देखा जा सकता है। यहाँ शिकार प्रतिबन्धित है।

आवागमन के साधन

दिल्ली, बम्बई मेन लाइन पर हिण्डौन सिटी और गंगापुर सिटी पश्चिम रेलवे के दो स्टेशन हैं। ये रेलवे स्टेशन कैलादेवी के लिये निकटस्थ हैं। यहाँ से कैलादेवी भवन तक के लिये प्रायः यात्री बसें मिलती रहती हैं। हिण्डौन सिटी स्टेशन से करौली ३० किमी. और जैसा कि लिख चुके हैं, करौली से कैलादेवी २५ किमी. दूर है। मेले के दिनों तो म.प्र., राजस्थान और उत्तर-प्रदेश के सीमावर्ती जिलों से प्रदेश निगमों की भी बसें प्रायः हजारों की संख्या में आती-जाती हैं तथा हजारों निजी वाहन भी कैलादेवी और कैलादेवी से स्वस्थानों को दौड़ते देखे जाते हैं। इस प्रकार आवागमन की सुविधा बराबर मिलती रहती हैं। गंगापुर सिटी व हिण्डौन सिटी स्टेशनों के मध्य महावीर जी स्टेशन पर उतरकर वहाँ से भी बस द्वारा कैलादेवी जाते हैं।

कालीसिल नदिया

मन्दिर के नीचे पहाड़ी की तलहटी में पूर्व से पश्चिम और फिर दक्षिण की ओर धनुषाकार एक नदी बहती है। यह नदी इसी पहाड़ी से निकलती है जिसे कालीसिल (शिला)नदी कहा जाता है। प्रायः यात्री इस नदी में स्नान करके माँ के दर्शनों को जाते हैं। नदी पर एक विशाल पुल बना हुआ है जिसको पार करके यात्री कैलादेवी ग्राम पहुँचते हैं।

शक्ति निवास एवं शाही धर्मशाला

नदी पर बने पुल को पार करने के पश्चात् सर्वप्रथम करौली महाहाज का निवास-स्थल 'शक्ति निवास' और उसके बाद शाही बड़ी धर्मशाला (राजा की धर्मशाला) है। धर्मशाला बहुत बड़ी है और प्राचीन प्रस्तर शिल्प का एक अच्छा नमूना है । उसका मुख्य द्वार २५ फुट ऊँचा तथा १० फुट चौड़ा है। जो पत्थरों से बना है और बहुत आकर्षक तथा कलात्मक है। इस धर्मशाला के समीप से मातेश्वरी के त्रिकूट पर्वत की चढ़ाई प्रारम्भ हो जाती है। इस चढ़ाई के बाद ही यात्री माताजी के भवन पर पहुँचते हैं।

मन्दिर की पहली झाँकी

करौली से कैलादेवी आते समय अतेवा गाँव से आगे चढ़ाई पड़ती है। इस चढ़ाई के अन्त में पत्थरों से बनी एक छतरी है। इस छतरी को नटणी की छतरी नाम से जाना जाता है। यहाँ आने पर मातेश्वरी के मन्दिर के स्वर्ण शिखर पर नीले आकाश में फहराती हुई लाल छोटी-बड़ी पताकाओं को पहली बार देखा जा सकता है। मन्द-मन्द वायु के झकोरों से फहरती हुई ये पताकाएँ कैलेश्वरी के यशोगान को दूर-दूर तक पहुँचाती रहती हैं। इन्हें देखकर यात्रियों में एक अपूर्व उत्साहपूर्ण श्रद्धा भर जाती है और वे आनन्दित हो माँ के जयकारे लगा के थिरकने लगते हैं, वे उमंगों से भर कर दर्शनों की उत्कट इच्छा को लिए नाचते-गाते आगे बढ़ने लगते हैं।

माताजी के भवन पर

लगभग एक किलोमीटर की चढ़ाई के बाद त्रिकूट पर्वत के शिखर पर जब पहुँचते हैं तो माताजी का दक्षिण-पूर्व के कौने को देखता हुआ सफेद संगमरमर का दिव्य शोभा से युक्त भवन सम्मुख होता है। भवन उच्च शिखर युक्त स्वर्ण कलशों तथा सुन्दर छतरियों से शोभायमान है। ऊपर गगन को चूमने वाली लाल-लाल पताकाएँ फहरती रहती हैं। प्रातः काल उषा की भगवा आभा से युक्त सूर्य किरणें जब संगमरमर

पर पड़ती हैं तो ऐसा लगता है मानो वर्फ से आच्छादित हिमालय सूर्यदेव के उदय होने पर लालिमा से युक्त हो कर दमक रहा है।

मन्दिर में प्रवेश करने के लिए सर्व प्रथम संगमरमर की आठ सीढ़ियाँ हैं जिनके दोनों ओर संगमरमर की बनी दो चौकियाँ हैं। यहाँ पर मातेश्वरी के वाहन एवं शक्ति के प्रतीक जंगल के राजा शेर की दो प्रतिमायें पहरेदार के रूप में लगी हुई हैं। ऊपर चढ़ने पर दोनों ओर दो बरामदे बने हुए हैं। माता के दाहिनी ओर वाले बरामदे में करौली के महाराजाओं एवं सेनापति आदि की तस्वीरें बनी हुई हैं। यहीं पर दो पण्डित दुर्गा सप्तसती का पाठ करते हैं। बाऐं बरामदे में शस्त्रागार है जिसमें बन्दूकें,तलवार आदि हथियार रखे हैं।

मन्दिर के अन्दर संगमरमर के अठारह खम्भे हैं। दाहिनी ओर नौबत, नगाड़े मस्त ताल के साथ बजते रहते हैं और बाईं ओर दीपकों को रखने की व्यवस्था है। यहाँ सैंकड़ों छोटे-बड़े दीपक दर्शनार्थियों द्वारा बोले हुए रखे होते हैं। अन्दर से दोनों ओर गैलरी नुमा दो दरवाजे बने हुए हैं। दाहिने दरवाजे के सामने चौक बना हुआ है जहाँ भक्तजनों द्वारा लाये हुए माँ के रंग-बिरंगे झण्डे रखे जाते हैं। दरवाजे के दोनों ओर महिषासुर मर्दिनी की दशभुजी झाँकी है। विशाल तस्वीरें हाथ की बनी हुई हैं जो करौली की चित्रकारी का बेजोड़ नमूना हैं।

दाहिनी ओर वाले द्वार के दोनों तरफ भी दो बड़ी-बड़ी तस्वीरें हैं जिनमें एक माता के झूला झूलने की है। इसमें माता जी झूले पर बैठी हैं तथा महाराणा भीमपाल तथा महाराजा भ्रमरपाल जी उनको झूला झुला रहे हैं। दूसरी ओर के चित्र में महाराजा भ्रमरपालजी विराजमान हैं जिनके दोनों ओर दो शेर बैठे हैं। दोनों चित्र बहुत सुन्दर बने हैं। यात्रीगण इनको देखते के देखते खड़े रह जाते हैं।

माई के निज द्वार के पट तथा दोनों ओर की खिड़कियों के द्वार चाँदी के बने हुए हैं। अन्दर मुख्य प्रकोष्ठ में चाँदी की कलात्मक चौकी पर चाँदी-सुवर्ण की छतरियों के नीचे मनोहारी सिंगार किये दो श्री विग्रह हैं जिनमें बाँई ओर वाला विग्रह बड़ा और टेढ़े मुखारविन्द

वाला है। यही मातेश्वरी कैलादेवी हैं। दाहिनी ओर वाला श्री विग्रह चामुण्डा माता का है। चामुण्डा और कैलादेवी दोनों की यहाँ एक साथ स्थापना नहीं हुई थी। यहाँ प्रारम्भिक प्रतिष्ठा भी श्री कैलादेवी जी की हुई थी। चामुण्डा देवी की यह प्रतिमा बाद में यहाँ लाई गई हैं जिसके विषय में आगे के पृष्ठों में विस्तार से बताया गया है।

प्रतिमाओं के समीप दो दीपक अविरल (अखण्ड)रूप से जले हुए रहते हैं। इनमें एक देशी घृत से और दूसरा तिल्ली के तेल से भरा जाता है।

देवी की पूजा-पद्धति के अनूकूल पूजा आरती होती है। विशेष पूजा-पाठ के अवसर पर राजपुरोहित या विशेष पंडितों की देख-रेख में समारोह होते हैं जिनमें करौली महाराज के वंशज भी पधारते हैं। भवन में सुन्दर चित्रकारी तथा कई बड़े- बड़े घण्टे टंगे हैं। जो भक्तों द्वारा जैकारों के साथ बजा दिए जाते हैं। पूजा-आरती के समय नगाड़े आदि बजाये जाते हैं। मुख्य मन्दिर में प्रवेश के लिए तीन द्वार हैं। सामने प्रमुख द्वार आने-जाने के लिए अलग-अलग दो भागों में विभक्त हैं। दोनों पार्श्व के द्वार प्रायः भीड़ के समय जाने–आने के लिए प्रयोग में आते हैं। परिक्रमा-मार्ग मन्दिर के बाहर है जिसमें एक साथ सैंकड़ों यात्री मैया की परिक्रमा कर सकते हैं। परिक्रमा मार्ग में अनेकों नर-नारी तथा बालक दंडौती परिक्रमा करते हुए भी देखे जाते हैं।

इस मुख्य मन्दिर के सामने बहुत बड़ा चौक है और चौक में एक ओर श्री गणेश जी, लाँगुरिया, बोहरा भक्त, भैरव आदि के मन्दिर एक पंक्ति में हैं। इनकी सेवा-पूजा भोग आदि का प्रबन्ध इसी मन्दिर के अन्तर्गत आता है।

मन्दिर में दर्शन का समय

मन्दिर बहुत सबेरे ही खुल जाता है। मंगला की झाँकी प्रातः चार बजे और इसके बाद आठे बजे श्रृंगार की झाँकी होती है। ग्यारह बजे माताजी का राज-भोग लगता है। दोपहर बारह बजे से एक बजे तक माता जी के शयन का समय है। फिर दोपहर एक बजे से रात नौ बजे तक दर्शन होते हैं। यात्रियों और भक्तों के निवेदन पर रात्रि जागरण

का कार्यक्रम होता है तब जागरण के पश्चात् शयन करा दिये जाते हैं।

मन्दिर का प्रबन्ध व यात्रियों को सुविधायें

मातेश्वरी के इस मन्दिर का प्रबन्ध एक ट्रस्ट द्वारा होता है जिसके सोल ट्रस्टी करौली के महाराजा है। ट्रस्ट मन्दिर की सेवा-पूजा तथा आय व्यय की पूरी देख-भाल रखता है तथा यात्रियों की सुख सुविधा के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। भवन एवं मन्दिर मे आने वाले यात्रियों की सुरक्षा के लिए मन्दिर का अपना रिसाला है। ट्रस्ट की ओर से मान्यता प्राप्त भगतों को ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है। अन्य यात्रियों के लिए एक सुन्दर धर्मशाला भी ट्रस्ट ने बनवाई है। सेवा-पूजा करने वाले गुसाईं परिवारों के लिए अलग से कमरे बने हैं। मन्दिर के समीप ही कुछ बस्ती भी है, अनेकों धर्मशालाएँ धनी मानी सज्जनों ने बनवादी हैं, अच्छा बाजार है। यहाँ डाकखाना, थाना, पावर हाउस, पीने के पानी के लिए दुर्गासर नामक बड़ा कुआँ, कालीसर पर पक्के घाट का निर्माण आदि अनेकों जनहित के कार्य हो चुके हैं।

चैत्र मास में जब यहाँ बहुत भारी संख्या में (लगभग ६-७ लाख) यात्री आते हैं तब ट्रस्ट की ओर से व्यापक प्रबन्ध किए जाते हैं। सरकारी प्रबन्ध भी बहुत बड़े पैमाने पर होते हैं। सड़कों और पुलियों की मरम्मत, प्याऊ लगवाने, रोशनी तथा सुरक्षा की व्यवस्था देखते ही बनती है।

यहाँ यात्रियों को ठहरने के लिए ट्रस्ट द्वारा निर्मित बड़ी धर्मशाला के अलावा मथुरावाली धर्मशाला नरसी गेस्ट हाउस, टोपीवालों की धर्मशाला, पेठे वालों की धर्मशाला, शिवचरण आगरे वालों की धर्मशाला, गुजराती धर्मशाला, पुख्य हैं। ट्रस्ट द्वारा अन्य एक और खुली धर्मशाला मन्दिर के पास ही बनवाई जा रही है जिसमें बड़े-बड़े खुले हॉल तथा अलमारियाँ बनवाई गई हैं और निर्माण जारी है। इसके बनजाने से यात्रियों को बहुत सुविधा हो जायेगी।

बस स्टैण्ड के समीप सुलभ शौचालय का निर्माण ट्रस्ट के अनुदान से किया गया है। शौचालय एवं स्नान की यहाँ अच्छी सुविधा हो

गई है। ट्रस्ट द्वारा एक बहुत बड़े अस्पताल का निर्माण भी हो रहा है। कहा जा रहा है कि सवाई माधोपुर जिले का यह सबसे बड़ा सुविधाओं से युक्त अस्पताल होगा।

मन्दिर की प्राचीनता

माँ श्री कैलादेवी का यह मन्दिर अब जिस भूमि पर बना हुआ है, वह भूमि कभी खींची राजा श्री मुकुन्ददास के अधिकार में थी। कहते हैं कि यह राजा मुकुन्ददास गागारौन नामक किले में रहते थे। यह किला अब भी मौजूद है। यह राजा चम्बल नदी के पार तत्कालीन कोटा राज्य के स्वामी थे। इन्होंने वर्तमान श्री कैलादेवी मन्दिर से लगभग १० किमी. दूर दक्षिण में बसे बाँसीखेरा गाँव में श्री चामुण्डा की मूर्ति स्थापित कर उसकी आराधना की थी। यह स्थापना बीजक के अनुसार सम्वत १२०७ में हुई। यह बाँसीखेरा गाँव अब खण्डहर रूप में है। चामुण्डा मैया की यही मूर्ति बाद में सेवा-पूजा के अभाव के कारण करौली के महाराज श्री गोपालसिंह जी के द्वारा सम्वत् १७०८ ई. में यहाँ प्रतिष्ठित हो गई। उस समय कैलादेवी का मन्दिर बहुत ही साधारण था। महाराज ने उस मन्दिर को पुनर्निर्माण द्वारा अच्छा रूप दिया। सम्वत् १७८७ में मन्दिर का निर्माण कार्य पूरा हुआ और उस समय इस कार्य में महाराजा ने अपने जेब खर्च में से दस हजार रुपये लगाये। मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा, ब्राह्मण भोजन, दान-दक्षिणा आदि सभी राजा ने स्वयं उपस्थित रहकर अपनी देख-रेख में कराया। मन्दिर के लिए उन्होंने कुछ भूमि को भी अधिकृत किया ताकि राज भोग सेवा-पूजा का कार्य सुचारू रूप से चलता रहे। यात्रियों के ठहरने तथा उनके लिए पीने के पानी के लिए भी उचित व्यवस्थायें धर्मशाला व कुण्ड बनवाकर करदीं।

पूर्व में इस कैलादेवी मन्दिर में इस भूमि पर स्थापना कब हुई और माई का यह श्री विग्रह कब और कहाँ से आया, इसका कोई प्राचीन लिखित लेख-अभिलेख या बीजक तो मिलता नहीं। हाँ, जनश्रुति तथा वृद्धजनों के आधार पर इस सिद्धपीठ की स्थापना के विषय में जो कुछ ज्ञात हो सका हमने संकलित करने का प्रयास किया तथा उसे लिपिबद्ध करके इस पुस्तक में आगामी पृष्ठों में दिया है।

देवीजी के प्रादुर्भाव की भूमिका

(दानव का अत्याचार)

जैसा कि ऊपर लिख चुके हैं कि सम्वत् १२०६ वि. में बाँसीखेड़ा नामक गाँव में राजा मुकुन्ददास खींची ने श्रीचामुण्डा मैया की आराधना के निर्मित एक मन्दिर चामुण्डा जी का बनवाया था। बाँसीखेड़ा के पास ही एक दूसरा प्राचीन गाँव उस समय था जिसे लोहर्रा नाम से जाना जाता था। ये गाँव भयानक घोर जंगल के मध्य थे। पास ही एक नदी बहती थी, जो आज भी कालीसिल के नाम से जानी जाती है। यहाँ के निवासी खेती तथा मवेशी पालन का काम करके अपनी गुजर-बसर करते थे। इस घोर बीहड़ जंगल में शेर-चीते जैसे हिंसक जानवर तो थे ही लेकिन उन दिनों वहाँ एक भयानक दानव भी पैदा हो गया था। हिंसक जानवरों का खतरा निरीह पशुओं तथा स्त्री बच्चों के लिए बना रहता था लेकिन अब तो बलवान पुरुष भी उस दानव के डर से थर-थर काँपने लगे थे। दुष्ट दानव का अत्याचार इतना बढ़ गया कि ग्रामवासियों का घरों से निकलना भी कठिन हो गया।

आये दिन कोई न कोई मनुष्य उस दानव का ग्रास बनने लगा। ग्रामवासियों के आनंदमय जीवन में एकाएक यह भयंकर विपदा आ पड़ी जिससे सब अकुला उठे और दानव से त्राण पाने की गुप्त मन्त्रणा करने लगे।

ग्रामवासियों की बाबा केदारगिरि से विनती

लोहर्रा गाँव से कुछ दूरी पर वर्तमान मन्दिर से ३ किमी. दूर एक गुफा बनी हुई है जहाँ बाबा केदारगिरि रहकर माँ भगवती की उपासना में दिनरात तल्लीन रहते थे। ये बाबा सभी ग्रामवासियों के पूज्य थे जो समय-समय पर ग्रामवासियों को सद्मार्ग व दिग्दर्शन कराते रहते थे। सहसा ग्रामवासियों को बाबा का ध्यान आया और वे यह विचार करके कि बाबा ही हमारी इस घोर विपदा का निवारण कर सकते हैं, ग्राम के वृद्ध जन एकत्रित होकर बाबा के स्थान पर पहुँचे। बाबा जो इस समय शक्ति माँ की उपासना में समाधिष्ट बैठे हुए थे। ग्रामवासी आर्त होकर बाबा के चरणों में जा गिरे। उनकी करुणामई पुकार सुनकर

बाबा का ध्यान टूट गया एवं ग्राम वासियों से दुखी होने का कारण पूछा।

ग्रामवासियों ने अपनी सारी व्यथा अश्रुपूरित नेत्रों से आरतवाणी में बाबा केदारगिरि को कह सुनाई तथा कहा कि हे महाराज हमें जैसे भी हो घोर विपदा से छुटकारा दिलवाइये। नहीं तो, यहाँ से दूसरे राज्य में जाने के अलावा हमें कोई भी अपने प्राणों की रक्षा का उपाय नजर नहीं आता।

केदारगिरि द्वारा ग्रामवासियों को जगदम्बा एवं चामुण्डा की उत्पत्ति का पूर्व प्रसंग सुनाना एवं दानव से छुटकारा दिलाने की साँत्वना देना।

ग्रामवासियों की आरतमय वाणी सुनकर तथा उनके इस महान संकट को समझकर बाबा का हृदय दुख से द्रवित हो उठा तथा सब ग्रामवासियों को सांत्वना देते हुए वो शक्ति के उपासक बाबा जिनको अपनी शक्तिमयी महामाया जगत-जननी मातेश्वरी पर पूरा भरोसा था, कहने लगे—

हे ग्रामवासियो, आप चिन्ता मत करो, हमारे दुःख को वह महामाया, हम सबकी माता जगत-जननी मातेश्वरी ही दूर कर सकती है जिस मातेश्वरी का चरित्र सब दुखों को दूर करने वाला है, उन्हीं आदि शक्ति का चरित्र मैं आपको सुनाता हूँ वह माता अवश्य इस दुःख से हमें त्रान दिलावेगी। आप एकचित होकर उस महामाई के चरित्र सुनो।

वह शक्ति माता के रूप में जगद्धात्री जगत्-जननी प्रत्यक्ष अवतार लेती है तथा उसकी अवस्था बाला से वृद्ध पर्यन्त है।

वह मातृ शक्ति एक शान्ति स्वरूप वात्सल्यपूर्ण मूर्ति है जो संसार की तपन को अपनी अमृतमयी दृष्टि डालकर शांत कर देती है। हम सभी के लिए मातृ शक्ति एक अमूल्य सम्पत्ति है हमारे लिए मातृत्व एक गौरव है जिसे कोई नहीं ले सकता। यही माता प्रकृति है और जीवन शक्ति है। माँ या माता या मैया इस नाम में अतुलनीय आनन्द भरा हुआ है। संकट में हर मनुष्य के मुख से पीड़ा के समय सहसा 'हाय माँ' शब्द ही उच्चारण होता है। यह स्वाभाविक है। माता ही जी-जान से बालक का लालन-पालन किया करती है। माता ही अपने

शिशु की खाने पीने खेलने-कूदने व नहाने-धोने की चिन्ता रखती है। माता में ही ऐसी शक्ति है जो संतान पर जरा सा कष्ट पड़ने पर सहायक बनकर अपने सभी कष्टों को भूल जाती है तथा सन्तान का दुख निवारण करती है। यही तो स्नेहमयी मातृशक्ति का परिचय है। माता ही आदर्श संतान उत्पन्न कर सकती है। वीर माता अपनी वीर सन्तति को जन्म देती है, वीर माता में वह शक्ति विद्यमान होती है जो युद्ध के घोर संकट काल में अपने वीर पुत्र को विजय माला पहनाकर माथे पर टीका लगाकर रणक्षेत्र में भेज देती है और यह कहकर आशीष देती है कि यदि तुम वीर माँ की सन्तान हो तो अपनी माता की कोख न लजाना।

अन्जनि ने महावीर बजरंगबली को जन्म दिया। सुभद्रा ने अभिमन्यु को, शकुन्तला ने भरत को, इसी तरह शिवाजी महाराज आदि वीर माता की ही सन्तति हैं। तो हम सब जगत जननी माता के पुत्र हैं। वह हमारी रक्षा अवश्य करेगी। जिस तरह महामाया ने महिषासुर रक्तबीज आदि को मारकर देवताओं की रक्षा की, उसी तरह माँ इस दानव से हमारी रक्षा करेगी। अब तुम महिषासुर की कथा सुनो जिसके कारण भगवती का प्राकट्य हुआ।

प्राचीन काल में दनु नामक महाराज के दो पुत्र हुए जिनका नाम रम्भ और करम्भ था। दोनों ही दानव बड़े वैभवशाली थे लेकिन दोनों ही सन्तानहीन थे। अतः पुत्र प्राप्ति के लिए दोनों भाई अग्निदेव की तपस्या करने लगे। जब ये समाचार शचिपति इन्द्र को मालूम हुआ तो उसे आशंका हुई कि शायद इनके पुत्र होकर मेरे राज्य को न छीन लें।

रम्भ और करम्भ पंचनद स्थान पर तपस्या कर रहे थे। रम्भ तो एक वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करता था तथा करम्भ जल में अन्दर डूबकर दुष्कर तप करने लगा। देवराज स्वयं ग्राह का वेष बनाकर पंचनद पहुँचे और जल में डूबे हुए करम्भ का पैर पकड़कर उसे समाप्त कर दिया। परन्तु उधर रम्भ की तपस्या पूरी हो गई। उस तपस्या से प्रसन्न होकर अग्नि देव प्रकट हुए और वर माँगने को कहा। जब रम्भ ने त्रिलोकी पर विजय प्राप्त करने वाला पुत्र माँगा तब अग्निदेव ने कहा कि हे महाभाग रम्भ जिस सुन्दरी पर तुम्हारा मन डिग जावेगा, उसी के

गर्भ से त्रिलोकी पर विजय पाने वाला पुत्र तुम्हें मिलेगा। इस तरह रम्भ अग्निदेव के चरणों में मस्तक झुका अपने स्थान को चल दिया। वह राक्षस तो था ही अतः एक दिन काम भाव से उसकी दृष्टि एक महिषी पर पड़ी। उस समय वह भैंस भी अपनी जवानी के मद में चूर थी अतः रम्भ के वीर्य से उस महिषी के गर्भ रह गया।

एक समय एक भैंसे ने रम्भ की महिषी को घेर लिया उसे बचाने के चक्कर में रम्भ स्वयं मारा गया तब यक्षों ने भैंसे को मारकर महिषी की रक्षा की और रम्भ के शरीर को चिता पर रखकर संस्कार करने लगे। महिषी भी अपने पति के साथ सती होने के लिए चिता में बैठ गई तब उस चिता में से एक भयंकर शब्द के साथ बालक उत्पन्न हुआ। उसका नाम महिषासुर प्रसिद्ध हुआ तथा रम्भ के शरीर से जो दूसरा बालक निकला उसका नाम रक्तबीज रखा गया। दोनों ने घोर तपस्या कर ब्रह्माजी से वरदान पा लिए और सारे देवताओं को हटाकर अपना अधिपत्य जमा लिया। अब वे घोर पापाचार करने लगे। उनके पाप से पृथ्वी एवं देवता अकुला गये और सब मिलकर एक दिन भगवान विष्णु के पास गये।

देवताओं की विपदाभरी बातें सुनकर विष्णु भगवान ने देवताओं को समझा कर कहा कि वह राक्षस वरदानी है तथा किसी स्त्री के हाथ से ही मर सकेगा। अतः हम सब अपने-अपने तेज से एक महाशक्ति उत्पन्न करें। वह महाशक्ति ही उस राक्षस का वध कर सकती है। तब तो सब देवताओं के शरीर से अलग-अलग शक्ति निकलकर एकत्रित होने लगीं, तथा उन सभी शक्तियों के समायोग से एक अति सुन्दर बालिका उत्पन्न हुयी जिसके अष्टादस भुजायें थीं। सब देवताओं ने उस महाशक्ति को अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र भी दिये। सब देवों ने मिलकर उस शक्ति की स्तुति भी की कि एक घोर राक्षस महिषासुर है, वह पृथ्वी तथा देवलोक में आतंक मचाए हुए हैं। अतः आप हमारी रक्षा करें तथा उस पापी राक्षस को उसके साथियों तथा सेना सहित नष्ट कर डालें।

देवी ने देवताओं की विनय के अनुसार महिषासुर पर चढ़ाई की और उसकी सेना के प्रधान वीरों उग्रवीर्य, वाष्कल, दुर्मुख, विडालाक्ष,

ताम्राक्ष आदि सहित महिषासुर का वध कर दिया तथा देवताओं को पुनः अमरावती का राज्य वापिस दिलाया।

इसी तरह शुम्भ-निशुम्भ तथा रक्तबीज नामक राक्षस भी वरदानी होकर फिर से पापाचार एवं अत्याचार करने लगे। वे सब देवताओं को दुखी कर अमरावती पर अपना अधिपत्य जमाकर अपना राज्य करने लगे।

देवता दुःखी होकर फिर माँ भगवती की आराधना करने लगे। भगवती माँ पार्वती ने अपने शरीर से एक विग्रह रूप प्रगट किया। वह परम रूपवती एवं शक्तिशालिनी माँ साकार रूप में प्रगट हुयी तो उसका नाम कौशिकी पड़ा। जो शरीर जीर्ण हो जाने के कारण काला पड़ गया उससे दूसरी देवी प्रगट हुई जिसका नाम कालिका हुआ। इन दोनों देवियों ने मिलकर शुम्भ-निशुम्भ आदि दानवों का संहार कर देवताओं को वापिस अमरावती का राज्य दिलाया। इस तरह से हे ग्राम वासियो! वह महामाया महाशक्ति अपने भक्तों का समय-समय पर संकट दूर करती है। अतः हम सब उसी का ध्यान करें। वही हमारे कष्टों का निवारण करेगी। अब आप अपने गाँव जाओ, माँ भगवती का हृदय में हमेशा ध्यान रखो। मैं भी माँ की उपासना करने हिंगलाज पर्वत पर जा रहा हूँ। वहाँ भगवती माँ को प्रसन्न करके दानव का वध करने को उन्हें यहाँ लेकर आऊँगा। ऐसा कहकर बाबा केदारगिरि ने सब ग्राम वासियों को विदा किया और स्वयं अपनी गुफा की पूजा का कार्यभार वहीं के एक राजपुत्र परिवार को जिन्हें जोगिया कहते हैं (जो अब भी मौजूद है)को सौंपकर हिंगलाज चल दिये।

बाबा केदारगिरि का हिंगलाज पर्वत पर जाकर तपस्या कर वरदान पाना

बाबा हिंगलाज पर जा पहुँचे और उन्होंने वहीं पर एकासन होकर माता महिषासुर मर्दनी जगत-जननी की घोर तपस्या प्रारम्भ कर दी। भक्तों को अभय करने वाली पराशक्ति महामाया अपने भक्त की घोर

तपस्या से प्रसन्न हुई। एक दिन वह भक्त के सामने प्रगट हो गयी, बाबा की समाधि टूटी। उन्होंने अपने सामने अलौकिक लावण्यमयी एक तेजपूर्ण रूप राशि को देखा। वह रूप परम अनूप था। वह एक कन्या समान प्रतीत हो रही थीं। उसके अष्टादश भुजाओं में विविध आयुध थे। बाबा केदारगिरि उस परम तेजोमयी रूप को देख नहीं सके और 'त्राहिमाम्-त्राहिमाम्' कहते हुए माँ के चरणो में गिर गये।

सहसा माँ का वरद हस्त बढ़ा और उन्होंने अपने भक्त की बाँह पकड़ ली। भक्त को बैठा दिया, सिर पर हाथ फेरा और कहा, 'भक्त तेरी तपस्या पूरी हुई। क्या चाहता है, वह मेरे से माँग ले!'

बाबा अपनी आराध्य माँ को पहचान गये और कहने लगे 'माँ, आप सर्वव्यापी घट-घट की जानने वाली हो। जिस कारण से मैं आया हूँ वह भी आपको विदित है। माँ, मेरी मनोकामना जल्दी पूरी करो तथा उस महादुष्ट का संहार करो। वहाँ की जनता को शान्ति दिलाओ। यही मेरी विनती है।' माता ने कहा—'मैं तेरी परोपकारिता पर प्रसन्न हूँ और जल्दी ही तुम्हारे स्थान पर आकर दुःख का निवारण करूँगी। हमेशा-हमेशा के लिए विग्रह रूप में तेरे यहाँ रहकर तेरी अभिलाषा पूरी करूंगी। अब तुम अपने स्थान को जाओ।'

देवी का बाबा की गुफा में प्रागट्य

भगवती माँ का आशीर्वाद तथा मनोभिलाषित वर पाकर बाबा अपनी गुफा पर वापस आ गए। बाबा के आने की बात सुन ग्रामवासी परम प्रसन्न हुए तथा बाबा से मिलने उनके स्थान पर आ पहुँचे। बाबा ने सारी अपबीती ग्रामवासियों को सुना दी तथा कहा कि आप निश्चिन्त रहें। माँ हमारे साथ हैं। दुष्ट का संहार जल्दी ही होने वाला है। इस प्रकार सांत्वना देकर उन्होंने सब ग्रामवासियों को विदा किया।

अब तो बाबा के हृदय में माँ की वही अलौकिक छटा समाई रहती थी तथा माँ के दर्शन फिर कब होवें, इसके लिए मन आकुल रहने लगा। वे माता के ध्यान में ही प्रायः तन्मय रहने लगे। अन्त में, माता ने एक रात बाबा को स्वप्न में दर्शन दिये। उन्होंने कहा कि भक्त

चिन्ता दूर कर। मैं तेरे पास आ चुकी हूँ, और अब जल्दी ही उस राक्षस का संहार होने वाला है। यह कहकर माता अन्तर्ध्यान हो गयीं

बाबा की निद्रा टूटी तो सब सामान्य था। जिस तरह जल को देखकर प्यासे की प्यास बढ़ जाती है, वही हालत बाबा की हुयी। माँ की उस एक झलक के दर्शन से उनकी व्याकुलता बढ़ गई। अब तो उनका पल-पल युगों-युगों के समान बीतने लगा। किसी तरह रात व्यतीत हुई। प्रातःकाल हुआ। बाबा अपने नित्य कर्म में तो लग गये। पर बाबा का मन तो उस अलौकिक रूप के दर्शन को व्याकुल था।

अतः बाबा की हालत बड़ी अकथनीय थी। कुछ करते, कुछ होता था। मैया के अलौकिक प्रेम में पागल बाबा ध्यानमग्न होकर बैठ गये।

मध्याह्न को वह घड़ी आ गई जब बाबा के सामने वह स्वप्न वाली छटा साकार रूप से प्रगट हुई। बाबा एकाएक डर गये लेकिन स्वप्न का स्मरण हुआ तो माँ को पहचान गए और माँ के चरणों में गिर गये। वे माँ के रूप को एकटक देखने लगे। मैया ने अपना वरद हस्त बाबा के सिर पर रख दिया। उस समय का दृश्य बड़ा अनुपम था। बाबा की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। उनके नेत्रों से प्रेम के अविरल अश्रु बह उठे। माँ ने कहा— 'भक्त, अब तेरी प्रेम तपस्या अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी है। अब मैं हमेशा तेरे पास हूँ। नित्य इसी समय तेरे यहाँ आया करूँगी। अब तू मेरे चरण छोड़ दे।' क्योंकि बड़ी प्रतीक्षा के बाद आज बाबा को माँ के चरणों का स्पर्श मिला था अतः बाबा चरण छोड़ने को तैयार नहीं थे। बाबा ने कहा— 'माँ अब सहा नहीं जाता। आपका वियोग बहुत हो गया, अब मेरे को छोड़कर कहीं मत जाओ। माँ ने कहा, वत्स चिन्ता दूर कर, मैं तेरे पास हूँ। जो तेरा कार्य है, वह भी मुझे करना है। मुझे घूम-फिर कर उस दानव को पकड़ कर मारना है। मैं नित्य तेरे पास आकर मनोविनोद किया करूँगी, अब अपना काम कर।'

माँ का आदेश बाबा को मानना पड़ा। माँ गुफा से निकल कर बाबा की आँखों से ओझल हो गई। बाबा उसी दिशा में उन्हें जाते देखते रहे।

भक्त बहोरा को देवी जी के दर्शन

अरावली के इसी अचंल में बाबा केदारगिरि की गुफा के पास एक और गुर्जर भक्त अपनी बकरियाँ चराता था। वह माँ के चरणों में अपना ध्यान रखकर माँ की निष्काम भक्ति में लीन रहता था। इस गुर्जर का नाम बहोरा था। यह खेरालिया गोत्र में उत्पन्न बहोरीपुर ग्राम का वासी था। बहोरा गुर्जर अपनी बकरियाँ चराने जब जंगल में आता तो बाबा केदारगिरि के पास बैठकर माँ की चर्चा सुनता रहता था। इस सत्संग से उसके हृदय में भी माँ की भक्ति के अंकुर फूट चुके थे। अब वह भी हमेशा माँ का ध्यान करता रहता। अपनी टूटी-फूटी भाषा में माता की महिमा से भरे भक्ति-गीत बड़ी श्रद्धा तथा तन्मयता के साथ गाता रहता था। माँ की भक्ति के गीतों में वह इतना लवलीन हो जाता कि अपने शरीर की भी सुधि नहीं रहती थी। माताजी ने अपने इस भक्त की यह दशा देखी तो एक दिन उसे भी दर्शन देने को उसके पास पहुँच गयीं।

माँ के सुन्दर रूप को देखकर बहोरा अचम्भित रह गया। वह कुछ समझ नहीं सका। माता के अनदेखे तेज को वह एकटक देखता ही रह गया। आखिर अपने भक्त की दशा पर माँ को दया आई। बोली-'हे भक्त! मैं ही वह शक्ति हूँ जिसका तू रात-दिन ध्यान करता है। मैं वही हूँ जिसके यश को अपनी भाषा में तू गाता रहता है।'

किन्तु बहोरा मौन था, भाव-विभोर था, उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे और क्या करे। अन्त में, वह माँ के चरणों में गिर पड़ा।

माँ बोली—मैं तेरी भक्ति पर प्रसन्न हूँ। आज मैं तुझे मनवांछित वर देने आई हूँ। बोल, तेरी क्या इच्छा है।'

बहोरा भला क्या कहता! अब भी वह कुछ समझ नहीं पाया फिर भी अपने टूट-फूटे लड़खड़ाते शब्दों में बोला-'क्या तुम ही वह माँ जगत्-जननी हो? मैं यही चाहता हूँ कि हमेशा ही इसी तरह मैं तुम्हारे सन्मुख खड़ा हुआ इस रूप को निहारता रहूँ, माताजी ने भक्त के वचनों

को सुना और कहा - हे भक्त मैं अभी तो समय-समय पर तुझे दर्शन देती रहूँगी। बाद में, जब मैं यहाँ मूर्ति रूप से पूजित होऊँगी तब तुझे भी अपने सम्मुख रखुँगी। तेरी पूजा भी मेरे साथ होगी। जो मनुष्य पितर-खोर से दुखी होंगे, उनके दुख को तुम्हीं दूर करोगे। अब तुम अपनी बकरियों को चराओ। मेरा ध्यान रखो।' यह कह माँ अन्तर्ध्यान हो गई। वही बहोरा समय पाकर इस नश्वर शरीर को त्याग कर माँ के वर्तमान मन्दिर के सामने मूर्ति रूप में पूजित हुआ जो आज भी मौजूद है।

दानव का संहार

इस तरह माँ भगवती बहोरा को वर देने के बाद फिर नित्य बाबा के पास आतीं। वहाँ वह चौपड़-पांसे खेलती थीं। इधर दानव को काफी समय से कोई भी शिकार नहीं मिल पाया अतः वह भी भूख से इधर-उधर भटकने लगा। उधर माँ भगवती को भी दानव की तलाश थी। देवयोग से एक रोज उस दानव का सामना माता से हो गया। उस समय माता ने अपना रूप एक बालिका का बना रखा था। उन्हे देखकर वह दानव अपनी क्षुधा मिटाने के लिए प्रसन्न होकर माँ को पकड़ने लपका माता ने भी उसके अभिप्राय को समझ लिया तथा तुरन्त अपना चण्डी रूप बना लिया। समस्त आयुधों से युक्त उनका वीर रूप देखकर दानव सहम गया लेकिन हिम्मत करके माता को ललकारने लगा। माता ने अपनी गदा का प्रहार किया जिससे दानव अकुला उठा तथा अपने प्राण बचाने के लिए वहाँ से भाग लिया। माता भी उसके पीछे क्रोध करके दौड़ीं। कुछ ही दूरी पर जाकर दानव ने पहाड़ी से नीचे नदी में छलांग लगाई तो माता भी उसके पीछे से कूद पड़ीं। वह दानव एक पत्थर की सिला पर जाकर गिरा। माता भी उसी सिला पर कूदकर आ गई। उन्होंने दानव की चोटी पकड़कर अपनी खड्ग से उसके मस्तक को अलग कर दिया। इस तरह वह दानव वहीं ढेर हो गया। जिस जगह माता ने उस दानव को मारा वह 'दाना दह' के नाम से जानी जाती है। वहाँ पर आज भी उस दानव के पैरों के तथा माताजी

के चिन्ह एक शिला पर बने हुए हैं। वहाँ छोटी सी छतरी भी बनी हुई है। यह दानादह वर्तमान मन्दिर से २ कि.मी. उत्तर की ओर तथा काली सिल पर बने पुल से १/२ कि.मी. पूर्व की ओर मौजूद हैं।

एक वणिक भक्त की नौका उबारना तथा माँ का अन्तर्ध्यान होना

एक रोज माताजी केदारगिरि के साथ नित्य की भाँति चौपड़ खेल रही थीं कि सहसा माता के हाथ से पांसे गिर गये और वह एकदम स्तब्ध हो गयीं। कुछ घड़ी बाद वे पूर्वावस्था में आकर फिर पांसे हाथ में लेकर चौपड़ खेलने लग गई। बाबा की समझ में कुछ नहीं आया। सब कुछ सामान्य हो गया। लेकिन सहसा बाबा की दृष्टि माता की लटों पर पड़ी जिनमें से पानी की बूँद गिर रही थीं। बाबा आश्चर्य में पड़ गए तथा बोले 'माता', यह क्या और कैसी लीला है? आपके केशों से पानी की बूँदें कैसे गिर रही हैं ? माता बोली कुछ नहीं बाबा, आप तो खेल खेलो, और बातों से आपको क्या लेना देना ? पर बाबा नहीं माने, हट पकड़ गये कि माता यह तो मुझे बताना ही होगा। माता ने कहा-'बाबा, मैं तुम्हें यह बता तो रही हूँ लेकिन अब तुम मुझे इस रूप में दुबारा नहीं देख सकोगे। यह कहकर माता बताने लगीं'— देखो, बाबा, तुम्हारी तरह मेरे अनेक भक्त हैं और मैं उन सबको समय-समय पर सहायता और सुरक्षा दिया करती हूँ। आज मेरा एक भक्त नौका में अपने व्यापार का सामान लादकर जा रहा था कि उसकी नौका जमुनाजी की भँवर में फँस गयी। उस वणिक भक्त ने मुझे इस विपदा के समय याद किया तो मैं उसकी सहायता के लिए वहाँ जा पहुँची तथा उसकी नौका को सहारा देकर भँवर में से निकालकर बाहर कर आई हूँ। इसी कारण मेरे इन बालों में जमुना का जल भर गया है।

'बाबा, तुम यह मत समझो कि मैं यहाँ होते हुए इतनी दूर कैसे पहुँची और नौका को कैसे भँवर से निकाला। ये सब मेरे लिए आसान कार्य हैं। मेरा रूप सब जगह मौजूद है लेकिन अपने कथनानुसार अब मैं तुम्हारे यहाँ दुबारा इस प्रत्यक्ष रूप में नहीं आऊँगी। इतना कहकर वह देवी अन्तर्ध्यान हो गई। कहते हैं कि यह सं० १४८७ की बात है।

नगरकोट से माताजी का मूर्ति रूप में आना

जिस समय विधर्मी शासकों ने हिन्दुस्तान में मूर्ति तोड़ना तथा मन्दिर लूटना चालू किया, उस समय माता की यह मूर्ति नगरकोट के एक मन्दिर में थी तथा एक योगिराज बड़ी श्रद्धा के साथ माता की पूजा करते थे। लेकिन जब उन योगिराज को आशंका हुई कि विधर्मी लोगों द्वारा मूर्ति तोड़ी जा सकती है तो उन्हें बडी चिन्ता हुई कि कहीं मेरी माता की मूर्ति को न तोड़ देवें। इसी सोच में योगिराज बड़े दुखी रहने लगे। इधर जब से माता ने बाबा केदारगिरि के पास आना बन्द किया तब से बाबा भी बड़े विकल रहने लगे। अब वे हर क्षण हर पल चिन्ता में ही बिताने लगे। अन्त में, माता जी ने बाबा को स्वप्न दिया कि हे भक्त मैं अब मूर्ति रूप में ही तेरे पास आने वाली हूँ। तू अपनी चिन्ता दूर कर। कुछ ही समय में मैं तेरे यहाँ आऊँगी। तू मुझे पहिचान लेना तथा जहाँ मैं अचल होकर रुक जाऊँ, वहीं मेरी स्थापना करा देना।

उधर नगरकोट में माता ने उन योगी बाबा को भी स्वप्न दिया कि हे योगी भक्त, तुम मेरी मूर्ति को यहाँ से पूर्वी राजस्थान में मुकुन्ददास खींची के राज्य में ले चलो और वहाँ मुझे राजा को संभाल आओ। इस तरह तुम्हारी आशंका दूर हो जावेगी। सुबह होते ही योगी बाबा ने स्वप्न की बात को ध्यान में रखते हुए माताजी के श्री विग्रह को छिपाकर अपने बैल पर रख लिया और दिन छिपते वहाँ से चल दिए। कई दिन की यात्रा के बाद वे उस स्थान पर आ पहुँचे जहाँ बाबा केदारगिरि की गुफा थी। हिंसक वन्य जीवों की डरावनी आवाजें, सायँ-सायँ चलती हवा वातावरण को और भयावय बना रही थी। ऐसे में योगिराज अपने बैल को हाँकते हुए चले जा रहे थे। माता जी का भरोसा किये हुए इस भयानक जगंल में भी वे निडर थे तथा तन्मयतापूर्वक जंगल में पर्वतों व नालों को पार करते हुए आगे गन्तव्य की ओर बढ़ रहे थे।

चलते-चलते संध्या का समय आ पहुँचा। अँधेरी रात, हिंसक जीवों का डर। अब तो उनका बैल भी थक गया था! अन्धकार के कारण

आगे बढ़ना कठिन ही नहीं, असम्भव होता जा रहा था। बाबा चाहते थे कि किसी तरह शीघ्र ही किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँच जायें। वे अपनी माँ का भरोसा करके बैल से मूर्ति को उतार कर जंगल में ही आराम करने लगे। साथ में जो कुछ भोग प्रसाद था, वह बाबा ने पाया तथा बैल को भी भूसा-चारा डाल दिया। अभी पूरी रात बाकी थी। तभी माता जी की विचित्र लीला हुई। कठोर हृदय बाबा का जी भी उस जंगल में काँप उठा। वे सोचने लगे कि इन भयंकर हिंसक जीवों के बीच यहाँ रात कैसे व्यतीत होगी। कहीं भी कोई गाँव नजर नहीं आ रहा है! बाबा इसी सोच में बैठे थे कि सहसा उनको एक मामूली प्रकाश सामने दिखाई दिया। उन्होंने समझा कि शायद कोई गाँव होगा। चलो, वहीं चलकर रात व्यतीत करें। यह सोच बाबा मूर्ति को बैल पर रखने की कोशिश करने लगे पर मूर्ति वहाँ से हिली भी नहीं। काफी प्रयत्न के बाद भी जब मूर्ति को नहीं उठा सके तो बाबा अपने बैल को ले और मूर्ति को वहीं छोड़कर उस प्रकाश की दिशा में चल दिये। कुछ ही समय के बाद बाबा प्रकाश के समीप पहुँचे तो क्या देखते हैं कि वह कोई गाँव नहीं है। केवल एक गुफा बनी हुई है। जिसमें एक महात्मा एकाग्र होकर बैठे हुए हैं। योगिराज ने उन बाबा को ध्यानमग्न देखा तो 'नमो नारायण' कहा। बाबा ने नेत्र खोले तो सामने एक योगिराज को देखा। बाबा अपने आसन से उठकर योगिराज तक पहुँचे तथा दण्डवत् कर प्रणाम उन्हें आश्रम में ले आये और आदर-सत्कार के बाद बाबा ने योगिराज से उनका हाल जानना चाहा। योगिराज ने अपनी सारी कहानी सुना दी तथा साथ ही कहा कि मेरे साथ चलकर मेरी इष्ट माँ भगवती की मूर्ति को आप यहाँ तक लिवा लाइये। बाबा केदारगिरि को अब अपने स्वप्न की बात साकार होती मालूम पड़ी। बाबा बड़े प्रसन्न हुए तथा अपनी आराध्य भगवती के दर्शनों की आकांक्षा उनके दिल में उमड़ पड़ी। अतिथि योगिराज को कुछ भोग-प्रसादी खिलाकर एवं बाबा के बैल को चारा डालकर योगिराज को बाबा ने समझाकर कहा कि देखो इस समय रात को जाना ठीक नहीं है प्रातःकाल चलकर आप मूर्ति को अपने साथ अपने गन्तव्य पर ही ले जाना। आज रात आप यहीं विश्राम करो। ऐसा कहकर बाबा ने योगिराज को चटाई

पर सुला दिया। योगिराज लम्बे मार्ग के कारण थके ही थे, जल्दी ही निद्रा देवी की गोद में समा गए। दूसरी ओर, बाबा केदारगिरि रात भर माँ का चिन्तन करते रहे।

माता का अचल होना तथा योगिराज का लौटना

रातभर बाबा केदारगिरि माता की मूर्ति के विषय में सोचते रहे कि यह मूर्ति किसी तरह यहीं रहनी चाहिए क्योंकि योगिराज ने मूर्ति के बारे में कहा था कि मैं मूर्ति को राजा मुकुन्ददास खींची के सुपुर्द करने जा रहा हूँ। यह सुन उन्हें निराशा हो गई। लेकिन माता के प्रभाव को स्मरण करके तथा 'भावी बलवान है जो माँ को स्वीकार है, वही होगा' विचारकर मन में सन्तोष किया। इसी तरह सोचते हुए प्रातःकाल हुआ पक्षियों की फड़फड़ाहट तथा कलरव के साथ योगिराज की निद्रा भंग हुई। पूरब दिशा में सूर्यदेव अपनी आभामयी किरणों से रात्रि के अन्धकार को विदीर्णकर अपने आगमन की सूचना देने लगे। योगिराज एवं बाबा केदारगिरि दोनों ने अपने-अपने प्रातः कालीन नित्य कर्म किये। अब सूर्यदेव अपने तेजस्वी बालरूप के साथ उदित हुये। चरवाहे अपने-अपने पशुओं को लेकर चराने जंगल की ओर चल दिए। कुछ ही समय में समीप के ग्रामवासी ग्वाले बाबा के दर्शनार्थ कुटी पर आ पहुँचे। बाबा ने उन्हें मूर्ति तथा योगिराज के बारे में जानकारी दी तथा उस मूर्ति को खींची राजा के यहाँ चम्बल पार तक पहुँचाने में सहायता देने को कहा—बाबा का आदेश पाते ही एक ग्वाला गाँव लोहर्रा में पहुँच तथा बाबा का सन्देश सब भक्तजनों को सुनाया। बाबा के आदेशानुसार गाँव के कुछ युवक गाँव के मुखिया के साथ जो एक वृद्धजन थे, बाबा की कुटी पर आ गये।

बाबा अपने भक्तजनों के साथ योगिराज को लेकर नदी के किनारे त्रिकूट पर्वत पर, जहाँ मूर्ति रखी हुई थी, आ पहुँचे। सबने मूर्ति के दर्शन किए और फिर योगिराज के कहे अनुसार मूर्ति को उठाकर बैल की पीठ पर लादने लगे किन्तु वे मूर्ति उठा नहीं सके। छोटी-सी उस मूर्ति को जब दो जने तिलभर न उठा सके तो चार-पाँच व्यक्ति मिलकर उठाने लगे। पर मूर्ति वहाँ से हिली भी नहीं। सबको बड़ा आश्चर्य

हुआ। जब बीस-पच्चीस व्यक्ति भी मिलकर उसे न उठा पाए तो सब हार मान कर बैठ गये। वे सब विचारने लगे कि अब मूर्ति को बैल पर किस तरह रखा जावे। जब कोई युक्ति नहीं सूझी तो बाबा केदारगिरि ने अपने मन के भाव योगिराज को प्रगट किए। बाबा केदारगिरि बोले—योगिराज, यह मेरी भी आराध्य माँ भगवती है। इन्होंने मुझे स्वप्न में बताया था कि मैं एक दिन हिंगलाज नगरकोटि से आकर इसी प्रकार अचल हो जाऊँगी। मेरे स्वप्नानुसार मूर्ति मेरे पास आ गई है। अब यह आगे नहीं जा सकती। आप निश्चिन्त होकर वापस जाएँ तो चले जाइये। आपकी इस मूर्ति की सारी जिम्मेदारी मेरे पर होगी। बाबा के अभिप्राय को समझकर सब ग्रामवासी भी योगिराज से एकमत होकर इन वचनों की पुष्टि करने लगे। अन्त में, योगिराज ने सबकी बात स्वीकार करली तथा तीन रोज वहीं बाबा का आतिथ्य स्वीकार करके नगरकोट को वापिस चले गए। वृद्धजनों के अनुसार यह लगभग ९०० वर्ष पूर्व की बात कही जाती है।

माता कैलादेवी की मूर्ति की प्रतिष्ठा

योगिराज के चले जाने के बाद बाबा ने पास के ग्रामीणजनों को एकत्रित किया। लोहर्रा-पीढ़पुर के पटेल, बहोरीपुरा का भक्त बहोरा पटेल एवं राजपूत मुखिया जिन्हें भोमियाँ के नाम से जाना जाता था, उपस्थित हुए। आज बाबा ने मूर्ति-प्रतिष्ठा के बारे में सबकी राय ली और फिर पंडितों से मुहूर्त निकलवाया। जल्दी से जल्दी चैत्र मास की प्रतिपदा नवरात्रि में स्थापना का शुभ मुहूर्त निकला। फिर क्या था ? समाचार फैलते ही चैत्र मास की प्रतिपदा के रोज प्रातःकाल से ही आस-पास के ग्रामीण एकत्रित होने लगे तथा ९ बजे तक काफी संख्या में बाल-वृद्ध स्त्री-पुरुषों का एक बड़ा भारी मेला-सा लग गया। सब मिलकर माता का जयघोष करने लगे एवं विभिन्न प्रकार के बाजे नगाड़े-तुरही, शंख, मजीरा बजाकर माता के गीत गाने लगे। शास्त्रोक्त रीति के अनुसार माता की मूर्ति को कालीसिल में विधिपूर्वक स्नान कराने के पश्चात् जिस जगह माता अचल हुई थी, वहीं एक चबूतरा

बनाकर स्थापित कर दिया गया। सबको आश्चर्य हुआ कि जो मूर्ति कुछ दिन पहले २०-२५ आदमियों से हिली भी नहीं थी, उसे २-३ आदमियों ने सुगमतापूर्वक उठाकर नदी स्नान कराके चबूतरे पर प्रतिष्ठित कर दिया था। अब तो नित्य प्रति माता की सेवा-पूजा विधिपूर्वक बाबा केदारगिरि करने लगे।

माता कैलादेवी का सुखदेव पटेल की देही में आना

माता की मूर्ति-प्रतिष्ठा के बाद आस-पास के समस्त ग्रामीण जन माता के दर्शनार्थ नित्य साप्ताहिक, मासिक जात करने आने लगे। माता की पूजा के लिए बाबा को दूर से आना पड़ता था, अतः सबने मिलकर एक मठ बाबा के रहने के लिए वहीं बनवा दिया (यह वह स्थान है जहाँ वर्तमान थाना है) अब तो माता की भभूति से ही सबके कार्य सिद्ध होने लगे।

अब सबके हृदय में अपनी प्रचलित प्रथा अनुसार यही भावना होने लगी की माता किसी के शरीर में पवन रूप में प्रवेश करके सबको दर्शन देवें। इसी प्रकार लोगों के दुःख-दर्द का निवारण हो सकेगा ।

सबने मिलकर सुखचन्द पटेल को जो संयमी था तथा माता की आराधना करता था, चुना और एकत्रित होकर माता के सम्मुख सुखचन्द को नहला धुलाकर बैठा दिया तथा बाजे-शहनाई के साथ माता के गीत गाने लगे एवं प्रार्थना करने लगे कि हे माता आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करो तथा सुखदेव भक्त के शरीर में प्रवेश कर सबको दर्शन कर लाभांवित करो। बाबा केदारगिरि ने भी माता से आग्रह किया। अन्त में, माई का हृदय द्रवित हुआ और सुखचन्द पटेल की देह में उनकी छाया प्रवेश कर गई। माई ने कहा—बाबा तुम्हारी प्रार्थना को मानकर मैं सुखचन्द पटेल की देह में आया करूँगी। पुण्य की जड़ सदा हरी है। यह कहकर माई की रमन चल गयी। इस तरह माई का चमत्कारिक रूप सामने आया और भक्तों की यात्रा इस पीठ पर तेजी से बढ़ने लगी। वर्तमान में देवीजी सुखचन्द के ही वंशज भरोसी लाल मीना के शरीर में आती हैं जब भी भक्त माँ का जागरण करवाते हैं

माता भक्त के शरीर में हवा रूप प्रविष्ट होकर भक्तों की 'मनोती' पूरी करती है तथा समाधान बताती है।

खींची राजा को देवी का चमत्कार दिखलाना

उधर गागरौन के राजा मुकुन्ददास खींची की किसी मामूली सी भूल पर धर्मान्ध बादशाह ने खींची राजा के पुत्र को पकड़कर काल कोठरी में बन्द कर दिया तथा उसे एक निश्चित समय पर फाँसी देने के आदेश दे दिये। खींची राजा को भी तोप के आगे रखकर उड़वाने का भी दण्ड सुना दिया।

इसी घोर संकट से बचने के लिए खींची बाँसीखेड़ा में बनी चामुण्डा देवी की बात करने तथा माता से अपने मृत्यु-दण्ड से छुटकारा पाने की आशा में पधारे। महाराजा तथा महारानी चामुण्डा देवी के मन्दिर में अपनी विनती माँ चामुण्डा से करने लगे। वहीं पर ग्रामवासियों ने राजा को कैलादेवी के बारे में भी सारी जानकारी दी। तब राजा अपने दिल में आशा की ज्योति लिए बड़ी भक्ति व आस्था के साथ कैला माँ की जात को पधारे। उन्होंने माता की भक्ति के साथ पूजा की और नियमानुसार माता का जागरण करवाया। माता की सुखचन्द पटेल के शरीर में रमण हुई तथा खींची राजा से यहाँ आने का कारण पूछा। राजा ने मातेश्वरी के सामने अपनी करुण कथा सुनाई और कहा कि हे मातेश्वरी आप मेरे पुत्र की तथा मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए। मैं तुम्हारी शरण हूँ। खींची राजा की आर्तवाणी सुनकर मातेश्वरी ने कहा— हे राजन् जा तेरा कुछ भी अनिष्ट नहीं होगा। तेरा पुत्र फाँसी की सजा से बरी हो जावेगा तथा तोपों से तेरी रक्षा मैं स्वयं करूँगी। तू अभी घर जाकर रामफल की बेल लगाना तथा उसमें आने वाले फलों को तांबें के क़लशों में रख देना तथा उन्हें अन्दर ही बड़ा होने देना। जब उन फलों का आकार ताँबे के बर्तन के बराबर हो जावे तब एक ब्राह्मण के लड़के को जो तुम्हारा खरीदा हुआ हो साथ में लेकर मेरी यात्रा पर आना। तब तेरा कार्य सिद्ध होगा। धर्म की जड़ सदा हरी है।' ऐसा कहकर माता का भाव जाता रहा।

बनाकर स्थापित कर दिया गया। सबको आश्चर्य हुआ कि जो मूर्ति कुछ दिन पहले २०-२५ आदमियों से हिली भी नहीं थी, उसे २-३ आदमियों ने सुगमतापूर्वक उठाकर नदी स्नान कराके चबूतरे पर प्रतिष्ठित कर दिया था। अब तो नित्य प्रति माता की सेवा-पूजा विधिपूर्वक बाबा केदारगिरि करने लगे।

माता कैलादेवी का सुखदेव पटेल की देही में आना

माता की मूर्ति-प्रतिष्ठा के बाद आस-पास के समस्त ग्रामीण जन माता के दर्शनार्थ नित्य साप्ताहिक, मासिक जात करने आने लगे। माता की पूजा के लिए बाबा को दूर से आना पड़ता था, अतः सबने मिलकर एक मठ बाबा के रहने के लिए वहीं बनवा दिया (यह वह स्थान है जहाँ वर्तमान थाना है) अब तो माता की भभूति से ही सबके कार्य सिद्ध होने लगे।

अब सबके हृदय में अपनी प्रचलित प्रथा अनुसार यही भावना होने लगी की माता किसी के शरीर में पवन रूप में प्रवेश करके सबको दर्शन देवें। इसी प्रकार लोगों के दुःख-दर्द का निवारण हो सकेगा ।

सबने मिलकर सुखचन्द पटेल को जो संयमी था तथा माता की आराधना करता था, चुना और एकत्रित होकर माता के सम्मुख सुखचन्द को नहला धुलाकर बैठा दिया तथा बाजे-शहनाई के साथ माता के गीत गाने लगे एवं प्रार्थना करने लगे कि हे माता आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करो तथा सुखदेव भक्त के शरीर में प्रवेश कर सबको दर्शन कर लाभांवित करो। बाबा केदारगिरि ने भी माता से आग्रह किया। अन्त में, माई का हृदय द्रवित हुआ और सुखचन्द पटेल की देह में उनकी छाया प्रवेश कर गई। माई ने कहा—बाबा तुम्हारी प्रार्थना को मानकर मैं सुखचन्द पटेल की देह में आया करूँगी। पुण्य की जड़ सदा हरी है। यह कहकर माई की रमन चल गयी। इस तरह माई का चमत्कारिक रूप सामने आया और भक्तों की यात्रा इस पीठ पर तेजी से बढ़ने लगी। वर्तमान में देवीजी सुखचन्द के ही वंशज भरोसी लाल मीना के शरीर में आती हैं जब भी भक्त माँ का जागरण करवाते हैं

माता भक्त के शरीर में हवा रूप प्रविष्ट होकर भक्तों की 'मनोती' पूरी करती है तथा समाधान बताती है।

खींची राजा को देवी का चमत्कार दिखलाना

उधर गागरौन के राजा मुकुन्ददास खींची की किसी मामूली सी भूल पर धर्मान्ध बादशाह ने खींची राजा के पुत्र को पकड़कर काल कोठरी में बन्द कर दिया तथा उसे एक निश्चित समय पर फाँसी देने के आदेश दे दिये। खींची राजा को भी तोप के आगे रखकर उड़वाने का भी दण्ड सुना दिया।

इसी घोर संकट से बचने के लिए खींची बाँसीखेड़ा में बनी चामुण्डा देवी की बात करने तथा माता से अपने मृत्यु-दण्ड से छुटकारा पाने की आशा में पधारे। महाराजा तथा महारानी चामुण्डा देवी के मन्दिर में अपनी विनती माँ चामुण्डा से करने लगे। वहीं पर ग्रामवासियों ने राजा को कैलादेवी के बारे में भी सारी जानकारी दी। तब राजा अपने दिल में आशा की ज्योति लिए बड़ी भक्ति व आस्था के साथ कैला माँ की जात को पधारे। उन्होंने माता की भक्ति के साथ पूजा की और नियमानुसार माता का जागरण करवाया। माता की सुखचन्द पटेल के शरीर में रमण हुई तथा खींची राजा से यहाँ आने का कारण पूछा। राजा ने मातेश्वरी के सामने अपनी करुण कथा सुनाई और कहा कि हे मातेश्वरी आप मेरे पुत्र की तथा मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए। मैं तुम्हारी शरण हूँ। खींची राजा की आर्तवाणी सुनकर मातेश्वरी ने कहा— हे राजन् जा तेरा कुछ भी अनिष्ट नहीं होगा। तेरा पुत्र फाँसी की सजा से बरी हो जावेगा तथा तोपों से तेरी रक्षा मैं स्वयं करूँगी। तू अभी घर जाकर रामफल की बेल लगाना तथा उसमें आने वाले फलों को ताबें के क़लशों में रख देना तथा उन्हें अन्दर ही बड़ा होने देना। जब उन फलों का आकार ताँबे के बर्तन के बराबर हो जावे तब एक ब्राह्मण के लड़के को जो तुम्हारा खरीदा हुआ हो साथ में लेकर मेरी यात्रा पर आना। तब तेरा कार्य सिद्ध होगा। धर्म की जड़ सदा हरी है।' ऐसा कहकर माता का भाव जाता रहा।

राजा कैलामाता का विश्वास करके अपने देश को लौट गया तथा मातेश्वरी के कहे अनुसार रामफल की बेल बोई और बेल पर फूल आने पर उनको ताँबे के बड़े-बड़े कलशों में रख दिया। वे फूल कलशों में फल बनकर बड़े होने लगे तो राजा को यह माँ का चमत्कार लगने लगा।

उधर बादशाह ने राजा के लड़के की फाँसी का आदेश रद्दकर उसे बरी कर दिया तथा केवल राजा को ही मृत्यु दण्ड देना निश्चित किया। जब राजा को पकड़वाकर बुला लिया तो राजा मातेश्वरी का ध्यान हृदय में धारण कर बादशाह के सम्मुख उपस्थित हुए। बादशाह ने अपने कहे अनुसार उन्हें तोप के मुँह पर रखकर उड़ाने का आदेश दिया। तुरन्त ही तोपची एवं कनास राजा को पकड़कर तोप के सामने ले गये। कनासों ने राजा को तोप से बाँधकर खड़ा कर दिया तथा तोपची ने तोप में पलीता लगाया। लेकिन मातेश्वरी की कृपा से काफी प्रयत्न के बाद भी तोप नहीं चल सकी। इसमें बादशाह को अपनी तौहीन मालूम पड़ी। उसने खीझकर राजा को छोड़ दिया तथा अपनी झेंप मिटाने को राजा को निर्दोष मानते हुए उसे सम्मान देकर विदा किया।

राजा ने अपने व पुत्र के प्राणों की रक्षा का चमत्कार मातेश्वरी कैलादेवी की प्रत्यक्ष कृपा मानी तथा माई के कहे अनुसार एक ब्राह्मण का बालक खरीदकर उसके साथ उन फलों के कलश ले अपने परिवार सहित माता की यात्रा के लिए पधारे।

ब्राह्मण-पुत्र को पुनः जीवन-दान तथा खींची राजा द्वारा मठ का निर्माण

राजा मुकुन्ददास परिवार सहित माता के दरबार में पधारे। अपने तथा पुत्र के प्राणों की रक्षा करने वाली कैला माँ का उन्होंने बड़े उत्साह के साथ पूजन-अर्चन करके माई का भाव करवाने की घोषणा की। इसके लिए आस-पास के गाँवों के ब्राह्मणों तथा अन्य सभी ग्रामवासियों को भी निमन्त्रित किया। बड़ी संख्या में लोग माता के मन्दिर पर प्रसाद ग्रहण करने तथा माता का चमत्कार देखने आये। माता का जागरण हुआ। राम फलों से युक्त ताँबे के कलशे एवं ब्राह्मण का बालक माता

के सम्मुख मौजूद थे। भगत के शरीर में माता की रमण हुई तथा ब्राह्मण बालक के ऊपर मोरछल झाड़ा, सहसा वह बालक हिलने लगा और बिना कहे उठकर उन ताँबे के कलशों में से राम-फलों को एक-एक कर बाहर निकालकर रखने लगा। संकरे मुख से बड़े-बड़े रामफल यों ही निकल रहे थे। इस आलौकिक दृश्य को देखकर सभी आश्चर्य चकित हो माता का जैकारा बोलने लगे। बारी-बारी से समस्त कलशों के फलों को निकालकर ब्राह्मण अपनी जगह पर आ बैठा।

जब ब्राह्मण बालक माता के सम्मुख आकर बैठा तो माता ने फिर भभूती उठाकर बालक के ऊपर डाली जिससे सहसा बालक के शरीर से अग्नि प्रज्ज्वलित हुई और वह बालक वहीं राख के रूप में बदल गया। इस अत्यन्त कारुणिक दृश्य को देख कर सभी हा-हाकार कर उठे तथा माता से बालक को पुनः जीवित करने की प्रार्थना करने लगे।

माता ने कहा कि इसीलिए तो यह बालक मैंने राजा से खरीदवाकर मँगवाया था। यह तो मैंने अपने अन्दर समर्पित कर लिया, अब कहाँ से आवे ? सभी ने माता से विनय की कि हे मातेश्वरी यह उचित नहीं है। आप अगर सच्ची माँ हो तो बालक को पुनः जीवित करो। माता ने कहा— 'मैंने तो केवल अपना परिचय दिया है' यह कहकर बालक की उस राख की ढेरी पर गंगाजल का छींटा दिया बालक तुरन्त ही उसी राख की ढेरी में से निकल आया। यह देखकर सबको परमहर्ष हुआ तथा माता का जयकारा बोलने लगे। राजा ने माता से कहा कि हे माता आप इतनी बड़ी करुण चमत्कारिता लोगों को मत दिखाया करो। इससे लोगों का दिल दुखी हो जाता है। हम आपकी शक्ति को अच्छी तरह जान गये हैं। आप महामाया,साक्षात् आदि शक्ति रूपा हो। आपकी जय हो। अन्त में,राजा ने माता से पूछा कि हे माता मेरे लिए क्या आदेश है ? मातेश्वरी ने कहा कि यहाँ पर मेरा मढ़ बनना चाहिए। राजा ने मातेश्वरी के कहे अनुसार माताजी का सुन्दर मढ़ बनवा देने की व्यवस्था तुरन्त कर दी।

मातेश्वरी का यह मढ़ विक्रम संवत् १४८९(सन् १४३२) में बनकर तैयार हुआ। माता का अभिषेक, वैदिक रीति से वेदमन्त्रों के साथ

कर्मकांडी ब्राह्मणों के द्वारा हुआ, होम यज्ञ तथा विशाल ब्राह्मण भो
भी राजा ने कराया। मातेश्वरी कैलादेवी एवं माँ चामुण्डा के लिए न
पोशाकें भेंट हुई तथा याचक व गरीबों को दान-दक्षिणाआदि दी गई
माई के नित्य राग-भोग के लिए उचित व्यवस्था करदी गई। इसके बा
राजा जब-तब तथा प्रतिवर्ष नवरात्रियों में आवश्यक रूप से यहाँ आ
लगे। दर्शनार्थियों की संख्या बहुत बढ़ गई और माँ कैला देवी व
मान्यता दूर-दूर तक पहुँच गई। इनकी महिमा ज्योति दुखी लोगों
मन को शांति देने लगी। भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी होने लगीं।
अपने-अपने संकल्पों के अनुसार माँ की सेवा तथा यात्रियों की सुविधा
के लिए धर्मशाला, प्याऊ आदि बनवाने लगे।

खींची राजा मुकुन्ददास के पश्चात इस मन्दिर की समस्त देख-रे
की जिम्मेदारी करौली राज्यके राजाओं पर निरन्तर वंशानुक्रम से आ
और आजतक यह उन्हीं के संरक्षण में है। इन यदुवंशी राजाओं
माताजी के इस मन्दिर की बहुत उन्नति की है। मातेश्वरी इनकी आराध
तथा कुलदेवी हैं। इन यदुवंशी राजाओं की पहिले देवगिरि व उटगि
में राजधानी थीं। सर्वप्रथम विक्रम सं० १५०६ वि. अर्थात् सन् १४५
में मन्दिर की इस समस्त भूमि को महाराजा चन्द्रसेन ने अपने अधिक
में ले लिया और उनके बाद उनके वंशजों ने इसके लिए काफी ध
व्यय करके शनैः शनैः इसका बहुमुखी विकास कर डाला।

महाराजा गोपालदासजी, धर्मपालजी, गोपालसिंह जी, प्रतापपाल ज
मदनपाल जी, जयसिंहपाल जी, अर्जुनपाल जी, भ्रमरपालजी, भीमपाल
एवं गणेशपालजी आदि महाराजाओं ने सबका समय और आवश्यकत
अनुसार तन-मन और धन से सेवाएँ करके वर्तमान रूप दिलाया है
इस विषय में कुछ विवरण पूर्व पृष्ठों में भी दिया गया है। आ
धनी-मानी भक्त- समाज भी इसके चतुर्दिक विकास के लिए तन-मन-ध
से प्रयत्नशील है और समय के परिवर्तन के साथ अनुभव की जानेवाल
समस्त जन-सुविधाओं को प्रदान करने में लगा हुआ है। यह सब मा
की लीला है। माई की कृपा से ही यह सब सम्भव है। माई का

दिया हुआ, माई को ही समर्पित है 'तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा' के अनुसार।

आगामी पृष्ठों में शक्ति की इस देवी का प्रादुर्भाव तथा इसकी पूजा मान्यता कैसे और कब से प्रारम्भ हुई यह विवरण वेदों और पुराणों के आधार पर देने का प्रयत्न किया गया है। जिससे देवी के भक्तों को अपने मातेश्वरी की महानता का बोध होगा।

शक्ति का पदार्पण

इसकी पूजा तथा मान्यता इतिहास

श्री मद्‌भागवत् पुराण में लेख आता है कि जब कंस ने वसुदेव के छः पुत्रों को मौत के घाट उतार दिया तथा सातवाँ पुत्र बलरामजी को योगमाया ने गर्भ से ही संकर्षण द्वारा रोहिणी के गर्भ में स्थापित कर दिया एवं आठवें गर्भ में स्वयं आनन्दकन्द भगवान् घनश्याम स्वरूप श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। आधी रात को जन्मे भगवान की प्रेरणा द्वारा वासुदेव रातों-रात गोकुल नन्दबाबा के यहाँ ले गये तथा वहाँ से यशोदा माता के गर्भ से उत्पन्न महामाया योगशक्ति, जो लड़की के रूप में जन्मी थी, को अपने साथ ले आये एवं कारागृह में पूर्वावस्था में बन्द हो गये। लड़की के रोने की आवाज से कंस घबराकर उठा तथा कारागृह में आकर उस सुकोमल, हाल ही में जन्मी, लड़की को ही अपना काल समझकर उस निर्दयी राक्षस ने पृथ्वी पर पछाड़ना चाहा, लेकिन यह क्या वह छोटी सी बच्ची कंस के हाथ से निकल कर आकाश में पहुँच गई और एक तेजमयी अलौकिक प्रकाश रूप दिखाई देने लगी तथा कंस को उसके भावी काल की सूचना दे गई। वही शक्ति अनेक रूपों में संसार में अवतीर्ण हुई तथा दुष्टों का संहार किया। उसी शक्ति की एक कला यहाँ करौली के बीहड़ों में दानव के अत्याचारों को खत्म करने तथा भक्तों को सुख देने आई और यहीं पर मूर्ति रूप स्थापित होकर जन कल्याणार्थ पूजित होने लग गयी।

सर्वप्रथम शक्ति के बारे में जान लेना आवश्यक है कि यह शक्ति क्या है ? इसके कितने रूप हैं तथा क्या आराधना है? इन सब का

जवाब शक्ति महापुराण में मिलता है।तो उसी शक्ति महापुराण के अनुसार आप लोगों के सामने इस सम्बन्ध में थोड़ा लेख प्रस्तुत है—

'भगवती जगदीश्वरी भुवनमाता देवी शक्ति की महिमा अनन्त है। उसका पार पाना दुर्लभ है। इसके बारे में जितना कहा जाय थोड़ा है। महाशक्ति जगदम्बा की चर्चा अनेक जन्मों के संचित पुण्य तथा भगवती की परम अनुकम्पा से ही उपलब्ध हो सकती है, अन्यथा नहीं। इस शक्ति पर ही सारा संसार टिका हुआ है। शक्ति से ही सबका संचार होता है, शक्ति के बिना कुछ नहीं। अतएव शक्ति प्रधान जगत् में सबकुछ शक्ति पर निर्भर है, कौन ऐसा होगा जो शक्ति के चरणारविन्दों में अपना मस्तक टेककर परम आराध्य शक्तियों के पावन पवित्र आख्यानों का श्रवण एवं मनन तथा पाठ नहीं करेगा माँ शक्ति की गौरवपूर्ण ज्ञान-गाथा के पढ़ने से भक्त को अक्षय फल, धन-धान्य, सुख- सम्पत्ति, जन-सन्तति विजय लाभ, समृद्धि-मुक्ति, आरोग्यता आदि पूर्ण मनोकामनाओं की पूर्ति अपने आप ही हो जाती है और भगवती दुर्गादेवी आद्यशक्ति अपने भक्त को प्रसन्न रखती हुई सदा रक्षा करती हुई सहायता करती है। देव, दानव, गन्धर्व, पन्नग, राक्षस एवं मानव आदिशक्ति के सदा उपासक रहे हैं।

अतएव सर्वप्रथम शक्ति शब्द का उल्लेख करते हुए शक्ति शब्द पर प्रकाश डालते हैं। शक्ति शब्द की व्याख्या कितने ही ग्रन्थों में की गई है। शक्ति शब्द के कितने ही अर्थ हैं। अमर कोश ग्रन्थ में शक्ति के प्रति लिखा है—

१. कासू सामर्थ्य योश्शक्तिः

२. शक्तिः पराक्रमः प्राणः

३. षड्गुणाश्शक्त यस्तिस्त्रः

पाणिय व्याकरण के मत से शक्त शक्तौ धातु से कितने प्रलत करने पर शक्ति शब्द बनता है। कार्य के उत्पादन उपयोग एवं अधिक सिद्ध धर्म विशिष्ट को शक्ति कहाजाता है। अर्थात् वह वस्तु जो प्रत्येक

चर, अचर, द्रव्य धातु की पूर्वावस्था में कुछ परिवर्तन कर सके, शक्ति कहलाती है।

विष्णु पुराण में लिखा है कि प्रत्येक पदार्थ में अलग-अलग शक्ति है। सभी भावों में भिन्न-भिन्न शक्तियाँ स्थित हैं जिनका न तो हम चिन्तन कर सकते हैं और न ही वे शक्तियाँ हमारे ज्ञान का विषय ही बन सकती हैं।

'परास्य शक्ति विविधेव श्रूयते श्वेतः' श्वरोपनिषद की इस श्रुति में परमेश्वर की अनेक परा शक्तियाँ वर्णन की गई हैं। विष्णु पुराण का कथन है कि जिस प्रकार अग्नि का प्रकाश एक ही स्थान से चारों ओर विस्तृत रूप दरसाता है, उसी प्रकार परब्रह्म शक्ति के दिव्य तेज से यह समस्त संसार प्रकाशित है अतएव इस समस्त जगत् को 'ब्रह्म शक्ति' कहते हैं।

एक देश स्थित स्माग्नि ज्योत्सना विस्तारिणी यथाः। परास्य ब्राह्मण श्शक्ति साधे अखिल जगत्।

परब्रह्म शक्ति को लक्ष्मी, श्री, पदमा, पद्मालिनी, कमला, विष्णु शक्ति कहागया है। विष्णु शक्ति, महालक्ष्मी, पराकमला पद्मश्री है जिसे अहंता शक्ति भी कहते हैं। भगवच्छति महालक्ष्मी के पाँच कार्य हैं—

१. प्रथम कार्य तिरोभाव - जीवात्वा के कर्म रूप अविद्या से आच्छादित होने को तिरोभाव कहते हैं।

२. दूसरा कार्य अनुग्रह जिसे मोक्ष कहते हैं।

३. तीसरा कार्य सृष्टि कार्य हैं।

४. चौथा कार्य पालन स्थिति है।

५. पाँचवा संहार नाश कार्य है। ये ही पाँचों कार्य परमेश्वरी के हैं। उनके इन कार्यों में शक्ति का जय योग होने के कारण ही ये शक्ति के कार्य कहलाते हैं।

यह परमात्मा की व्यापक रूप शक्ति है। आगर्भ शास्त्र एवं तन्त्र शास्त्र तथा यामल ग्रन्थ व देवी पुराणादि आर्ष ग्रन्थ सृष्टि विद्या रूपी

दश शक्तियों का दिग्दर्शन कराते चले आ रहे है। ये दसों शक्तियाँ तन्त्र शास्त्रादिक आर्ष ग्रन्थों में दस महा विद्या के नाम से विख्यात हैं। इन दसों महाविद्यायों के नाम प्राचीनकाल के तन्त्र ग्रन्थों में इस प्रकार हैं -

१- महाकाली २- महातारा ३- महाषोडशी ४- भुवनेश्वरी
५- प्रचण्ड चण्डिका छिन्नमाल ६- महाभैरवी ७- धूमावती
८- बगलामुखी ९- महामातंगी १०- कमला। ये दस महाशक्ति हैं।

राज राजेश्वरी जगदम्बा की पूजा -पद्धति का रूप एवं आराधना रहस्य

शक्ति की आराधना सिद्धि प्राप्ति के लिए विशेषकर की जाती है। तन्त्र शास्त्र में शक्ति की उपासना का उद्देश्य सिद्धि आदि लाभ की प्राप्ति करना है। शक्ति की पूजा, हवन-तप, न्यास, पाठ, स्तुति, वन्दना करने पर नाना प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं और उनसे अभीष्ट तथा अनिष्टसंहारक शक्ति का चमत्कार प्रगट होने लगता है।

शक्ति नाम से बहुत सी उपासना होती हैं। उस उपासना से परमात्मा की ही प्राप्ति होती है। इसलिए श्रद्धा और प्रेमपूर्वक सद्‌गुरु की शरण में जाकर गुरु दीक्षा लेकर शक्ति मन्त्र द्वारा विज्ञानानन्द स्वरूप महाशक्ति भगवती देवी की उपासना एवं आराधना तथा पूजा व वन्दना पाठ सभी आवश्यक करना चाहिए। यही जीवन का परमसार रूप तत्व है। यही निर्गुण स्वरूप देवी शक्ति जीवों पर दया करके स्वयं प्रकाश स्वरूपा ज्योतिमयी शक्ति सगुण भाव को प्राप्त होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश रूप में उत्पत्ति और संहार कार्य करती है।

राज राजेश्वरी महाशक्ति भगवती जगदम्बा की पूजा दो प्रकार से तन्त्रशास्त्र में वर्णित है। वह इस प्रकार है—पूजा सभी देवियों की एवं शक्ति की है जिसे सभी शक्ति-भक्त कहते हैं। शक्ति की पूजा का एक भाग अन्तर्याग तथा दूसरा वहिर्याग है।

अन्तर्याग में सभी पूजा-प्रणाली और मानसिक तौर पर की जाती हैं और बहिर्याग में सभी पूजा विधि—उपचार रूप में जाहिर करके की

[जा]ती है। बहिर्याग के बिना अन्तर्याग होना अत्यन्त कठिन है। बहिर्याग [के] प्रधानत : पाँच अंग हैं। पहला अंग जप है। दूसरा अंग हवन है, [ती]सरा अंग तर्पण है, चौथा अंग मार्जन है और पाँचवा अंग ब्रह्म भोज [है]:

महाशक्ति के किसी एक मन्त्र का जप विधिपूर्वक पुरश्चरण के [नि]यमानुसार करना और उसके स्वरूप की शोडषोपचार पूजा करना [त]था मन्त्र जाप की दशांश संख्या का हवन सामग्री से अग्नि में हवन [क]रना, तर्पण करना, मार्जन करना तथा शक्ति की प्रसन्नता के लिए [सु]योग्य ब्रह्मणों को भोजन कराना इन पाँचों अंगों के द्वारा जो बहिर्याग [क]र लेता है तभी वह मानसिक पूजन अन्तर्याग का अधिकारी होता [है]। इसी प्रकार अन्तर्याग के भी पाँच अंग हैं। यथा -

(१) पटल (२) पद्धति (३) वर्म (४) स्तोत्र (५) सहस्त्रनाम या अष्टोतर [श]तनाम कहते हैं।

पटल उसे कहते हैं जिसमें मूलाधार स्वाधिष्ठान मार्ग पूजक अनाहत [वि]शुद्धि आज्ञा और सहस्त्रार चक्र पर देवी माता के स्वरूप की मानसिक [रू]प में भावना से चित्त को शक्तिमय करना होता है।

मन्त्रों द्वारा पंचोपचार व षोडषोपचारों से हृदय कमल पर देवी का [पू]जन करना ही पद्धति है अपने इष्ट देव के मन्त्र से अपनी देही पर [क]वच की रचना करके अथवा देवियों के नाम से शरीर के प्रत्येक हिस्से [क]ी रक्षा करना कवच या वर्म कहलाता है।

देवी के मन्त्रों की याद जिससे बराबर बनी रहे, उसे स्तोत्र कहते [हैं।] देवी के हजारों नामों का बोध कराने वाली विधि को सहस्त्रनाम [क]हते हैं। ये पाँचों अंग अन्तर्याग के कहे गये हैं। इन दोनों बहिर्याग [औ]र अन्तर्याग से वन्दनीया माता श्री दुर्गा देवी महाशक्ति को बारम्बार [न]मस्कार है।

पुराणों के मतानुसार देवी का प्रादुर्भाव

प्राचीन ग्रन्थों में माता के प्राकट्य एवं चरित्र की अनेक कथायें आती [हैं]। उन्हीं ग्रन्थों में स्कन्दपुराण में कैला देवी के विषय में एक लेख

मिलता है। यह लेख स्कन्दपुराण के ६५ वें अध्याय में आता है जिसमें धर्मराज युधिष्ठिर महाराज माँ भगवती की आराधना करते हैं। यात्रा के समय कोई संकट नहीं आवे, यह विचार कर श्रीकृष्ण भगवान् के बताये अनुसार माँ भगवती की स्थापना करके (कैलेश्वर्यादि देवी की स्थापना) कैलेश्वरी देवी की आराधना करते हैं। जब छोटे भाई भीमसेन यह देखते हैं कि धर्मराज आज कोई तुच्छ देवी की आराधना में लगे हुए हैं तो सोचते हैं अरे, सबसे बढ़कर तो श्री शंकर हैं उनकी ही उपासना सर्वोपरि है। तब भीमसेन हँसकर युधिष्ठिर से कहते हैं—'हे अग्रज, सारा संसार आपको धर्मराज कहता है। सब समझते हैं कि आप सर्वज्ञ एवं ज्ञान शिरोमणि हैं लेकिन यह मेरा सोचना गलत निकला क्योंकि आप आज महाशिव को त्यागकर तुच्छ देवी की आराधना कर रहे हैं। यह भला हमारी क्या रक्षा कर सकती है? आपका ज्ञान तो धूल के बराबर है तथा आप जूतियों को सिर पर रखना चाह रहे हैं।

भीमसेन के ये वाक्य सुनते ही माँ भगवती रुष्ट हो जाती हैं तथा भीमसेन के नेत्रों की ज्योति नष्ट कर देती हैं। तत्काल चमत्कार से भीमसेन घबरा गये तथा अपनी गल्ती पर रोने लगे, तब वे धर्मराज युधिष्ठिर के कहने पर अधीर होकर माँ की आराधना इस प्रकार करने लगे-

'हे देवी, तुम विष्णु भगवान की सहाय्यकारिणी तथा जगत की माता हो। विष्णु भगवान स्वयं तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम जगत का उद्धार करने वाली हो। तुम्हें सर्वमंगला कहकर भक्त पुकारते हैं। हे देवी अगर आप सर्वमंगला हैं तो मेरे दुःख को दूर करो। मुझे नेत्र-दान देकर मेरा कष्ट हरण करो। मैं तुम्हारी शरण हूँ।'

इस तरह आरतमय होकर जब भीमसेन माँ की स्तुति करने लगे तो माँ प्रसन्न हो गई तथा भीमसेन को त्रिनेत्र का वरदान देते हुए कहा—'हे भीमसेन सुन, जब-जब धर्म की हानि होती है तथा दुष्टों का अत्याचार बढ़ जाता है तभी मैं अनेक रूपों में पृथ्वी पर आकर दुष्टों का संहार करती हूँ। मैं पृथ्वी का भार उतारकर भक्तों को सुख देती हूँ। मैं

श्रीकृष्ण की वह बहिन हूँ जिसने कृष्ण के साथ नन्द के घर जन्म लेकर वसुदेव द्वारा रातों-रात कारागृह में प्रवेश किया था।

माँ की जात और पूजा-सामग्री

माँ की दर्शन यात्रा करने वालों का बराबर ताँता लगा रहता है। बहुत से यात्री दर्शन करके वापिस तुरन्त चले जाते हैं जबकि बहुत से जात बोलकर आनेवाले यात्री वहाँ एक रात ठहरते हैं। भोग-प्रसाद चढ़ाते हैं, जागरण करवाते या जागरण देखते हैं, कन्या लांगुरा जिमाकर अगले दिन वापिस होते हैं। अगले वर्ष की फिर माँ के दर्शनों की मनौती करते हैं। यह बात औरतें जो गीत गाती हैं, उससे भी जाहिर होती हैं। यथा 'अबके तो हम बहुएं लाए, अबके जरूलौ लावेंगे।

जात करने के लिए आने वाले यात्री-भक्त कोरे-कपड़े पीले, लाल, गुलाबी या सफेद अपनी-अपनी पृथा के अनुसार पहनकर घर से आते हैं। सबके हाथों में छोटी -बड़ी झंडिया होती हैं। माताजी के भजन भेंट लांगुरिया गाते हुए ही आते हैं। मोटरकार बसों, गाड़ियों से व पैदल आने वालों की सभी ओर से माँ के जयकारे और गीतों की ध्वनियाँ गूँजती है। यथा 'चल पिया दोउ मिल जायें। परसें देवी जालपा ओ मां' लांगुर लइयो रथ जुतवाय मैं जाऊँ जात करोली की' आदि। भक्त लोग माई जी के पूजन की सामग्री अपने-२ साधन और प्रचलन के अनुसार लाते हैं। लेकिन प्रायः नारियल, रोली, कलाया, मेंहदी, बीड़ा पान बतासे हरी चूड़ियाँ, माँ की ध्वजा, छत्र, लौंग, गूगर, फूल माला, दीपक, अगरबत्ती, धूप, चन्दन, माँ के लिए पोशाक, लहँगा, ब्लाउज, भोग हलुआ, पूरी, चना, घन्टा, घण्टारी आदि जरूर चढ़ाते हैं। माता की ज्योति करते हैं तथा दान-दक्षिणा चढ़ाते हैं। ब्राह्मण, कन्या-लांगुरा आदि जिमाते हैं।

कालीसिल नदी में प्रायः भक्त यात्री स्नान करके माई के दर्शन-पूजा को जाते हैं। बहुत से माता का जगराता कराते हैं, तथा बहुत से जगराता का आनन्द लेने के लिये भेंट देकर उसको देखते हैं।

बाबा केदारगिरि की शिष्य-परम्परा

यह पहले लिख चुके हैं कि इस मन्दिर के निर्माण में बाबा केदारगिरि का ही प्रारम्भिक प्रयास था तथा उन्हीं पर इसकी सेवा-पूजा का उत्तरदायित्व डाला गया। उनके बाद उनके शिष्य सर्वश्री अचलगिरि, सन्तोषगिरि, देवगिरि, गोवर्धन गिरि निरंजन गिरि, उमरावगिरि, हरकत गिरि, मुकुन्द गिरि, दुर्गागिरि, रामगिरि आदि ने माई की सेवा पूजा का भार संभाला और क्रमशः भक्तों को अपने-अपने आशीर्वचनों तथा देवी की पूजा आराधना सम्बन्धी अपने अनुभवों तथा निर्देशों से लाभान्वित किया।

मन्दिर में बलि, मांस-मदिरा का निषेध

पहले बताया जा चुका है कि सं० १७८१ में जिस समय महाराजा गोपालसिंह जी (सन् १७२४-१७५७) करौली की राज गद्दी पर सुशोभित हुए तो उन्होंने मातेश्वरी का दर्शन किया। वहाँ उनको माई का छोटा सा मढ़ अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं प्रतीत हुआ तो उन्होंने उसको फिर नया रूप प्रदान करने का विचार किया। एक लडाई में विजय प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपनी मन की इच्छा अनुसार माई के मढ़ का पुनर्निर्माण कराया। इसी समय 'ब्रांसीखेड़ा ग्राम के समीप के निवासियों ने आकर राजा को बतलाया कि बांसीखेड़ा ग्राम ऊजड़ हो जाने से वहाँ के चामुण्डा माता के मन्दिर की देख-रेख व सेवा-पूजा का प्रबन्ध नहीं हो पाता है। राजा से उन्होंनें प्रार्थना की कि यदि आपकी स्वीकृति हो जाये तो वहाँ की मूर्ति की स्थापना यहीं करदी जाय। महाराजा सहमत हो गये और उन्होंने बीजक सहित मूर्ति वहाँ लाकर स्थापित करने की आज्ञा तो देदी किन्तु उन्होंने यह विचार करके कि चामुण्डा जी तो तामसी हैं और बलि आदि स्वीकार करती हैं, इससे कैलादेवी के समीप स्थापित करने में अड़चन रहेगी, भक्तों से सलाह-मशवरा किया। तब यह तय हुआ कि माई के इस निज मन्दिर में कोई भी बलि नहीं चढ़ा सकेगा। माँस-मदिरा का प्रयोग नहीं कर सकेगा। तब से यहाँ चामुण्डाजी के होते हुए भी बलि तथा मांस-मदिरा वर्जित है।

कैलादेवी का मुख टेड़ा क्यों ?

माँ कैला देवी की मूर्ति का मुख एक ओर टेढ़ा है। इस बारे में कई किवदन्तियाँ हैं। इनमें कौन बात सही है, इस चरित्र को कौन जान सकता है। कुछ भक्तों का कहना है कि गोली नामक भक्त को किसी कारण से मन्दिर में घुसकर दर्शन नहीं करने दिये, इससे माँ कुपित हो गई और इसी से उनका मुख एक ओर टेढ़ा हो गया। जबकि कुछ लोगों का कहना है कि माताजी का एक भक्त जाते समय माँ से कह गया था कि माँ मैं जल्दी ही लौट कर आऊँगा लेकिन वह फिर नहीं आ सका। अतः माँ भक्त जिस दिशा में गया था, उसी ओर देखती रहती है। कुछ लोगों का विचार है कि मातेश्वरी ने अपना मुख चामुण्डा देवी की ओर से घुमा लिया है और वह इसलिए कि चामुण्डाजी तमोगुणी हैं और वह मांस-मदिरा आदि का भक्षण करती है। माँ कैलादेवी सात्विकी है, सतोगुणी हैं और वे इन चीजों का सेवन नहीं करतीं।

माताजी का नाम कैला क्यों ?

पूर्व पृष्ठों में बता चुके हैं कि द्वापर युग में भीमसेन की स्तुति पर प्रसन्न होकर माँ ने कहा था कि कलिकाल में मुझे कैलेश्वरी नाम से जाना जाएगा, क्योंकि मैं अपनी कला से यहाँ अवतरित हाऊँगी। अतः इनका नाम कैलेश्वरी पड़ा जो संक्षिप्त में 'कैला' भी कहा जाने लगा, दूसरे, कलियुग की देवी होने के कारण इनको कैला कहा जाने लगा। कुछ लोग कहते हैं कि एक कला से यहाँ अवतरित होने के कारण माँ का नाम कैला हुआ।

कन्या लाँगुरियाँ व जोगिनी

देवी के भजन-गीतों में कन्या-लाँगुर व जोगिन शब्द सुनने को मिलते हैं। देवी की जात को जाने वाले भक्तगण अपनी जात (यात्रा) को सफल बनाने के लिए कन्या-लाँगुरा जिमाते हैं। इसमें छोटी-छोटी लड़कियाँ तथा लड़कों को खाना खिलाया जाता है। लाँगुर देवी के गण हैं तथा अविवाहित लड़की-कन्या देवी की प्रतिरूप मानी जाती है। 'जोगिनी' विवाहित स्त्रियों को कहा जाता है जो देवी की भक्ति में रहती हैं। देवी

के अनुचरों में बावन भैरों, छप्पन कलुआ तथा चौंसठ जोगिन बताई गई हैं। लाँगुरिया की मूर्ति सिन्दूर वदना है और बटुक भैरव की ही भाँति है। अतः हो सकता है कि इन्हें ही लाँगुरिया कहा जाने लगा हो।

कैलादेवी के समीप दर्शनीय स्थल

विजासन देवी

कैलादेवी से लगभग ४ किमी. उत्तर की ओर कालीसिल नदी के दानादह से आगे खोहरी गाँव में माता विजासन देवी का मन्दिर है। कहा जाता है कि बहुत समय पहले ग्राम में एक बार मवेशी तथा मनुष्यों में भयंकर बीमारी फैली और अकाल मृत्यु होने लगीं। सभी लोग इस बीमारी के कारण अत्यधिक परेशान और चिन्तित रहने लगे। गाँव के मुखिया ने इसका उपाय सोचा कि देवी शक्ति की आराधना की जाय। इस सम्बन्ध में हरिसिंह नामक धोबी की सहायता ली जाने की बात हुई। वह पास के बसई गाँव में रहता था और देवी का एक बड़ा भगत था। उस पर रात को देवी का भाव आया तो देवी ने बताया कि मैं विजासन देवी हूँ। मेरी पूजा कई जगह होती है यदि गाँव में मेरा मढ़ बनवाया जाये तो आप लोग इस बीमारी से छुटकारा पा सकते हैं। ग्राम वासियों ने देवी का मढ़ बनवाया। उसकी वहाँ प्रतिष्ठा की गई लेकिन बीमारी का प्रकोप कम नहीं हुआ। दुबारा भाव करवाया गया तो देवी ने बतलाया कि तुमने मेरा मढ़ अशुद्ध जगह बनवाया है। मेरी मूर्ति को उठाकर पश्चिम की ओर ले जाया जाये। जहाँ मूर्ति बजनी हो आये और आगे न ले जाई जा सके तो वहीं मेरी स्थापना करके मढ़ बनवाया जाये। निदान ऐसा ही किया गया और देवी का नया मन्दिर बनवाया गया। आज भी यह बीजासन वाली देवी उसी धोबी परिवार वालों को आती हैं।

बरवासन देवी

कैलादेवी से लगभग १० किमी. दक्षिण में सघन जंगलों के मध्य बरवासन देवी का मन्दिर है। चैत्र में रामनवमी के दिन यहाँ बड़ा भारी मेला लगता है। राजस्थान में इस देवी की मान्यता भी काफी है। यह मन्दिर भी काफी पुराना है। कहते हैं कि जब महमूद गजनबी ने यहाँ

मन्दिरों को नष्ट करने का दुष्कर्म शुरू किया और वह यहाँ माता जी के मन्दिर के नष्ट करने के लिए इधर आया तो उसके सैनिकों को लाखों मधु-मक्खियों के द्वारा काटे जाने के कारण सूजे हुए हाथ, मुँह लेकर ग्रामवासियों से इसकी दवा पूछने लगा तो लोगों ने बादशाह को देवी की ढोक लगाने को कहा तथा भभूती शरीर पर मलने को दी।

बादशाह की इससे पीड़ा कम हुई तो उसने वहाँ चढ़ावा किया तथा एक लिखित आदेश-पत्र का शिलालेख मन्दिर में अपनी मान्यता को लगाया। यहाँ रामनवमी के दिन के मेले में देवी के भगत एक मीणा पर भाव आता है। उस भगत को देवी की रमण के समय जीभ बाहर निकल आती है और तब एक छोटा सा त्रिशूल उसकी जीभ में आरपार छेद दिया जाता है। २-२ ॥ घंटे बाद त्रिशूल निकाला जाता है। त्रिशूल छेदने की इस रीति को यहाँ शालबाड़ कहते हैं।

करणपुर वाली देवी

यह कैलादेवी से ३३ किमी. दूरी पर चम्बल नदा के समीप एक छोटे गाँव में है जिसका नाम करणपुर है। यह देवी का एक बहुत प्राचीन मन्दिर है। इस देवी को बीसाजन या गुमानी देवी नाम से भी पुकारते हैं। गुमानी इसलिए कहते हैं कि यह देवी बहुत जल्दी कुपित होने वाली है। कहते हैं कि इस देवी की ज्योति को देखने वाले व्यक्ति को प्रतिवर्ष यात्रा करने जाना चाहिए, नहीं तो देवी के कोप का भागी बनना पड़ता है। यहाँ के लिए कैलादेवी से बस मिलती हैं।

श्री कैला चालीसा

दोहा

जय जय कैला भगवती, कला शक्ति अवतार।
जन रंजन भंजन विपति, माता जगदाधार।

जय जय कैला मात भवानी। आदि शक्ति रूपा कल्याणी॥
रूप तुम्हारो अद्भुत अम्बा। जगपालक तुम हो जगदम्बा॥
तुम्हरी महिमा सब जग जानी। सुर-नर-मुनि सबने तुम मानी॥
कलयुग कलाशक्ति अवतारी। त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी॥

तुमने दानव दैत्य पछारे । लोहासुर से पापी मारे ॥
केदारगिरि तप कीन अपारा । ता संग खेलीं चौपड़ सारा ॥
भक्त बहोरा अजा चराता । निस दिन मनमें तुमको ध्याता ॥
ताके अम्बे कारज सारे । भक्त शिरोमणि रख्यौ दुआरे ॥
भूत प्रेत की खोर हटाता । माँ की भक्ति तुरत दिलवाता ॥
नृपखींची पर दया दिखाई । सुत फांसी से लीन बचाई ॥
तुमरो नृप ने थान बनायो । नित पूजन का नियम चलायो ॥
ज्योतिअखंड जली जब माँकी । चन्द्रसेन नृप देखी झाँकी ॥
यदुवंशिन कुल पूज्य भवानी । समर विजय कर नृप ने जानी ॥
चन्द्र वंश विस्तार बढ़ायो । माँ को सुन्दर भवन बनायो ॥
पूजा कीन्ह गुसाईं तुम्हारी । जग कीरत आपन विस्तारी ॥
तुम्हीं अम्बे दुर्गे काली । वैष्णव देवी हो विकराली ॥
विंध्य-वासिनी दैत्य विदरनी । आदिशक्ति हे अरि दलदरनी ॥
नव दुर्गा नित कला निराली । गिरि त्रिकूट माँ शेरां वाली ॥
चामुण्डा संग आप विराजीं । द्वारे नित प्रति नौबत बाजी ॥
घंटन की ध्वनि होत अपारा । भक्त करत माँ का जयकारा ॥
घुटुअन लाँगुर चलत भवनमें । नाचत जोगन तेरे अँगन में ॥
कलयुग कर कृपाण संभारी । करता मात धर्म की ख्वारी ॥
आपन प्रभाव आन विस्तारौ । माता तुम्हीं करो निस्तारौ ॥
खड्गधारणी भक्त उबारनि । माता जगत के काज सँवारनि ॥
कलयुग तुम्हीं एक अबलम्बा । क्यों करती हो मात विलम्बा ॥
केहरिवाहन सजकर आओ । कलि महिषी से आन छुड़ाओ ॥
धूम्र विलोचनि बाहु बिसाला । रक्तबीज भव कौन विहाला ॥
जगदम्बा बन मात पधारो । निजजन को तुम आन उबारो ॥
बनिकभक्त की नाव बचाई । मूलसिंह की लाज रखाई ॥

भक्तन को सुख देतभवानी । कोढ़ी काया बने सुहानी ॥
भक्तन कोभक्ती की दाता । मनवांछित फल देती माता ॥
माँको मन्दिर हैअति सुन्दर । ध्वजा - पताका फहरे ऊपर ॥
आगे लाँगुर वीर बिराजै । गौरी सुत की झांकी साजै ॥
दुर्गेश्वर शिव औघड़ दानी । रहते तुम्हरे साथ भवानी ॥
सूखा बाँस हरा कर डारा । पत्थर से प्रकटी जल धारा ॥
कालीसर तेहि नाम कहाता । जो जन प्रेम से आनि नहाता ॥
ध्वजा नारियल पान सुपारी । माँ के रखते आनि अगारी ॥
इच्छा माता पूरी करती । गोदी खाली माता भरती ॥
नितप्रति चालीसा जो पढ़ता । भव सागर में फेर न पड़ता ॥
कृपा 'मूल' पर कर महारानी । खड़ौ द्वार जोड़ दोउ पाणी ॥

जग जननी मातेश्वरी, पुनि पुनि जोडूँ हाथ।
चालीसा पूरन करौ, 'मूल' मनोरथ साथ ॥

॥ दोहा ॥

विनय मेरी सुन लीजिए, पूरन कीजे आस।
करुणामयी ओ अम्बिके, मम उर करो निवास॥

ममउर करो निवास अम्बिका, जगत की प्रतिपाल हो ।
महि असुर की मर्दनी मेंटो महा भव जाल हो ॥
आयौ शरण में भगवती जन को करो निहाल हो ।
धवल धाम विराजती माँ ज्योति वर्णा लाल हो ॥
अखंड ज्योति नौ खंड में, चरणों में तेरे हो रती ।
त्रिकूट पर्वत वासिनी, देरी करो माता मती ॥
सिंह वाहन बैठ आओ, निज आन को भूलो मती ।
मन 'मूल' चरणों में लगा, करदो भगत की सुगती ॥

॥ आरती ॥

ओम जय कैला रानी, मैया जय कैला रानी ।
ज्योति अखंड दिपे माँ तुम सब जगजानी ॥
तुम ही शक्ति भवानी, वांछित फल दाता ॥ मैया०
अद्भुत रूप अलौकिक, सदानन्द माता ॥ ओ०
गिरि त्रिकूट पर आप बिराजीं चामुण्डा संगा ॥ मैया०
भक्तन पाप नसाबौ, बन पावन गंगा ॥ ओ०
भक्त बहोरा द्वारे, रहता करता अगवानी ॥ मैया०
लाल ध्वजा नभ चूमत, राजेश्वरि रानी ॥ ओ०
नौबत बजे भवन में, शंख नाद भारी ॥ मैया०
जोगन गावत नाचत, दे दे कर तारी ॥ ओ०
ध्वजा नारियल रोली पान सुपारी साथा ॥ मैया०
लेकर बड़े प्रेम से जो जन यहां आता ॥ ओ०
दर्श-पर्श कर माँ के मुक्ती जन पाता ॥ मैया०
भक्त सरन है तेरी, रख अपने साथा ॥ ओ०
कैलाजी की आरती जो जन है गाता ॥ मैया०
'मूल' कहे भवसागर, पार उतर जाता ॥
ओम् जय कैला रानी..........

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी । नमो नमो अम्बे दुःख हरनी ।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी । तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥
शशिललाट मुख महाविशाला । नेत्र लाल भृकुटी विकराला ॥
रूप मात को अधिक सुहावे ।दर्शकरत जन अतिसुख पावे ॥
तुम संसार शक्ति लै कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ॥
अन्नपूरणा हुई जग-पाला । तुम्हीं आदि सुन्दरी बाला ॥

प्रलय काल सब नाशनहारी । तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥
शिव योगी तुम्हरो यशगावें । ब्रह्मा, विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥
रूप सरस्वति को तुम धारा । दे सुबुद्धि ऋषि-मुनिन उबारा ॥
धरो रूप नरसिंह को अम्बा । प्रकट भई फाड़ के खम्बा ॥
रक्षा करि प्रह्लाद बचायो । हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं । श्री नारायण अंग समाहीं ॥
क्षीरसिंधु में करहि त्रिलासा । दयासिंधु दीजै मन आसा ॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी । महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी धूमावति माता । भुवनेश्वरि बगला सुखदाता ॥
श्री भैरवतारा जगत्तारणि । छिन्नभाल भव दुःख निवारणि ॥
केहरि वाहन सोहे भवानी । लांगुर वीर चलत अगवानी ॥
करमें खप्पर खड्ग विराजे । जाको देखि काल डर भाजे ॥
सोहे अस्त्र और त्रिशूला । जासे उठत शत्रु-हिय शूला ॥
नगरकोट में तुम्हीं विराजत । तिहूँ लोक में डंका बाजत ॥
शुम्भ निशुम्भ दैत्य तुम मारे । रक्तबीज संखन संहारे ॥
महिषासुर नृपअति अभिमानी । जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥
रूप कराल काली को धारा । सैन सहित तुम उसे संहारा ॥
परी भीर सन्तन पर जब-जब । भई सहाय मातु तुम तब-तब ॥
अमरपुरी अरु बासव लोका । तव महिमा सब कहैं अशोका ॥
ज्वाला में हैं ज्योति तुम्हारी । तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावें । दुःख दारिद्र निकट नहीं आवें ॥
ध्यावैं तुमहि जो नर मनलाई । जन्म-मरण ते सो छुटि जाई ॥
योगी सुर मुनि कहें पुकारी । योगन होयबिन शक्ति तुम्हारी ॥
शंकर आचारज तप कीनों । काम-क्रोध जीत सब लीनों ॥
निशिदिन ध्यानधरों शंकर को । काहू काल नहिं सुमरो तुमको ॥

शक्ति रूप को मरम न पायो । गई शक्ति तब मन पछितायो ॥
शरणागत हो कीर्ति बखानी । जै जै जै जगदम्ब भवानी ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा । दई शक्ति नहिं कीन बिलम्बा ॥
मोको मात कष्ट अति घेरे । तुम बिन कौन हरे दुःख मेरे ॥
आशा-तृष्णा निपट सतावै । रिपु-मूरख मोह अति डरपावै ॥
शत्रु नाश कीजै महारानी । सुमिरों इकचित तुम्हें भवानी ॥
करो कृपा हे मातु दयाला । ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला ॥
जब लगि जियों दया फलपाऊँ । तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ ॥
दुर्गा चालीसा जो गावें । सब सुख भोग परम पद पावें ॥
देवीदास शरण निज जानी । करो कृपा जगदम्ब भवानी ॥

दुर्गाजी की आरती

सुन मेरी देवी पर्वत वासिन कोई तेरा पार न पाया ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल लै तेरी भेंट चढ़ाया ॥ १ ॥
सुवा चोला तेरे अंग विराजे, केशर तिलक लगाया ॥ २ ॥
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शंकर ध्यान लगाया ॥ ३ ॥
नंगे-नंगे पैरों अकबर आया, सोने का छत्र चढ़ाया ॥ ४ ॥
ऊँचे -ऊँचे पर्वत बन्यो शिवाले, नीचे शहर बसाया ॥ ५ ॥
धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगाया ॥ ६ ॥
ध्यानू भगत तेरा गुण गावैं मनवांछित फल पाया ॥ ७ ॥

विन्ध्येश्वरी चालीसा

॥दोहा॥

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो-नमो जगदम्ब !
सन्तजनों के काज को, करती नहीं विलम्ब ॥

॥ चौपाई ॥

जय-जय जय विन्ध्याचलरानी । आदिशक्ति जगविदित भवानी ॥
सिंह वाहिनी जय जगमाता । जय-जय-जय त्रिभुवन सुखदाता ॥

कष्ट निबारनि जय जगदेवी । जय-जय सन्त असुर सुर सेवी ॥
महिमा अमित अपार तुम्हारी । शेष सहस मुख वर्णत हारी ॥
दीनन के दुःख हरत भवानी । नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी ॥
सब कर मनसा पुरवत माता । महिमा अमित जगत विख्याता ॥
जो जन ध्यान तुम्हारो लावै । सो तुरतहिं वांछित फल पावै ॥
तुही वैष्णवी तुही रुद्रानी । तुही शारदा अरु ब्रह्मानी ॥
रमा राधिका श्यामा काली । तुही मातु सन्तन प्रतिपाली ॥
उमा माधवी चण्डी ज्वाला । वेगि मोहि पर होहु दयाला ॥
तुही हिंगलाज महारानी । तुही शीतला अरु विज्ञानी ॥
दुर्गा दुर्ग बिनाशिन माता । तुही लक्ष्मी जन सुखदाता ॥
तुम्ही जाह्नवी अरु रुद्रानी । हेमावती अम्बे निर्वानी ॥
अष्टभुजी वाराहिनि देवा । करत विष्णुशिव जाकर सेवा ॥
चौंसट्टी देवी कल्यानी । मंगला गौरा सब गुणखानी ॥
पाटन मुम्बा दन्त कुमारी । भद्र कालि सुन विनय हमारी ॥
वज्रधारिणी शोकनाशिनी । आयु रक्षिणी विन्ध्य वासिनी ॥
जया और विजया बैताली । मातु संकटा अरु विकराली ॥
नाम अनन्त तुम्हार भवानी । बरनै किमि मानुष अज्ञानी ॥
जापर कृपा मातु तब होई । तो वह करै चहै मन जोई ॥
कृपा करो मोपर महारानी । सिधि करिये अब यह ममबानी ॥
जो नर धरे मातुकर ध्याना । ताकर सदा होय कल्याना ॥
विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै । जो देवी का जाप करावै ॥
जोनर कहँ ऋण होय अपारा । सो नर पाठ करै शत बारा ॥
निश्चय ऋण मोचन होजाई । जो नर पाठ करै मन लाई ॥
स्तुति जो नर पढ़ें पढ़ावैं । या जग में सो बहु सुख पावैं ॥
जाको व्याधि सतावै भाई । जाप करत सब दूर पराई ॥

जो नर अतिबन्दी महँ होई । बार हजार पाठ कर सोई ॥
निश्चय बन्दी ते छुटिजाई । सत्य वचन मम मानहु भाई ॥
जापर जो कछु संकट होई । निश्चय देविहिं सुमिरे सोई ॥
जा कह पुत्र होत नहिं भाई । सो नर या विधि करै उपाई ॥
पांच वर्ष लों पाठ करावै । नौरातन महँ विप्र जिमावैं ॥
निश्चय होय प्रसन्न भवानी । पुत्र देहि ता कहँ गुणखानो ॥
ध्वजा नरियल आनि चढ़ावै । विधि समेत पूजन करवावै ॥
नित प्रति पाठ करै मनलाई । प्रेम सहित नहिं आन उपाई ॥
यह श्रीविन्ध्याचल चालीसा । रंक पढ़त होवै अवनीसा ॥
यह जनि अचरज मानहु भाई। कृपा दृष्टि जापर हुइ जाई ॥
जै जै जै जग मातु भवानी । कृपा करहु मोहि पर निज जानी ॥

विन्ध्येश्वरी स्तोत्र

निशुम्भ शुम्भ गर्जनी, प्रचण्ड खंड खंडनी ।
बने रणे प्रकाशिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी । १ ।
त्रिशूल मुन्ड धारिणी, धरा विघात हारिणी ।
गृहे गृहे निवासिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी । २ ।
दारिद्र दुःखं हारिणी, सुता विभूति कारिणी ।
वियोग शोक हारिणीं, भजामि विन्ध्यवासिनी । ३ ।
लसत्सुलोल लोचनं, लतासनं वर प्रदं ।
कपाल शूल धारिणी, भजामि विन्ध्यवासिनी । ४ ।
करो मुदा गदा धरा शिवः शिवः प्रदायिनी ।
वरा वरानना शुभा, भजामि विन्ध्यवासिनीं । ५ ।
ऋषीन्द्र जामिनी प्रदं, त्रिधास्य रूप धारिणी ।
जले थले निवासिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी । ६ ।

जले थले निवासिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी । ६ ।
विशिष्ट शिष्ट कारिणी, विशाल रूप धारिणी ।
महोदरे विलासिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी । ७ ।
पुरन्दरादि सेविता, सुरारि वंश खंण्डिता ।
विशुद्ध बुद्धि कारिणी, भजामि विन्ध्यवासिनी । ८ ।

श्री दुर्गा स्तुति

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे ॥
सुन जगदम्बा कर न विलम्बा, सन्तन कौ भण्डार भरे ।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे ॥
बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे ॥
वार वृहस्पति सब जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे ।
माता होकर पुत्र खिलावे, भार्या होकर भोग करे ॥
शुक्र सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे ।
ब्रह्मा विष्णु महेश सहस फल, लिये भेंट तेरे द्वार खड़े ॥
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे ।
वार शनिश्चर कुमकुम वरणी जब लोंकड़ पर हुक्म करे ॥
खड्ग त्रिशूल हाथ लिए माता, रक्त बीज को भस्म करे ।
शुम्भ निशुम्भ पछाड़े माता, महिषासुर को पकड़ दले ॥
आदित वार आदि का राजत, अपने जनका कष्ट हरे ।
कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे ॥
सौम्य स्वभाव धरे गौरी माता, जनकी अरज कबूल करे ।
सिंह पीठपर चढ़ी भवानी अखिल भुवन में राज करे ॥

दर्शन पावैं मंगल गावैं, सिद्ध साधक तेरी भेंट धरें।
ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे, शिव शंकर जी ध्यान धरें॥
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चंवर कुबेर डुलाय करें।
जय जननी जय मात भवानी, जय काली कल्याण करें॥

माँ की स्तुति

फिल्म-जमुना किनारे

करौली वाली कैला मैया- करौली वाली ओ मेरी मइया।
तू ब्रह्माणी, तू रुद्राणी, तू देवी नारायणी।
तू अविनासी, तू सुखरासी तू उजियाली। करौली०
आई दरबार तेरे,फूल हैं न चन्दन
जानूँ नहीं पूजा मैं, जानूँ नहीं वन्दन
मन ही दीया है और मन की है बाती
सांसों की जलाऊँ मैं ज्योति दिन राती ।
तू रामायण तू ही गीता, पूरा कर मेरा मन चीता
मैं हूँ भोली भाली। करौली वाली०
अन्धे को दे नैना, गूँगे को दे बानी
घर वर कन्या को देती तू ही महारानी
तेरे महलों में सीधा चला आया
रोगी जोगी भोगी तीनों ने सुख पाया ।
जो जो माँगे सोई पाए, खाली हाथ न कोई जाये
झोली भरने वाली। करौली वाली०

श्री कैलादेवी स्तुति

भगतन की लज्जा राखियो, जय जगदम्बे मइया।
जय जगदम्बे मइया जय जगदम्बे मइया ॥

भगतन की लज्जा रखियो जय जगदम्बे मइया।
त्रिकूटपर्वत पर भवन बनो है,मकराने की शोभा न्यारी॥
पौरी पर दो सिंह विराजें लाँगुरिया अगवानी।
भगतन को लज्जा रखियो, जय जगदम्बे मइया॥
आगे तेरे हरियल पीपर पिछवारे बड़ की डाली।
बगलमें झण्डा है चाँदीका,उड़रही लालध्वजा अतिभारी॥
भगतन की लज्जा राखियो जय जगदम्बे मइया।
वामन भैरों छप्पन कलुआ चौंसठ जोगिन चलें अगारी॥
बाजे ताल मृदङ्ग और डमरू भूरा सिंह सवारी।
भगतन की लज्जा रखियो जय जगदम्बे मइया॥
ब्रह्मा हारे, विष्णु भी हारे, हारे शंकर डमरूवारे।
बडे-बड़े हैं दानव मारे, शुंभ निशुंभ पकर पछारे॥
भगतन की लज्जा राखियो, जय जगदम्बे मइया।
तुमही काली खप्पर वाली, तुम्हीं मात करौली वाली॥
कैलाकेलेश्वरी महारानी,तुमरो वचन न जावे खाली।
जय जगदम्बे मइया, भगतन की लज्जा ....

श्री कैला माँ की झाँकी

आओ भक्तों तुम्हें दिखावें झाँकी कैला मात की ।
माँ कैला के दर्शन करके तर गये लाखों पात की ॥
आओ भक्तों तुम्हें दिखावें झाँकी कैला मात की ।
जय जय मात मम, जय जय मात मम् ॥
रजत सिंहासन माता बैठी चामुण्डा माँ साथ है।
सिर सोने का छत्र विराजे खडग सुहानी हाथ है ॥
भाल विशाल सिन्दूरी चेहरा मंद मंद मुस्कान है ।
रक्त सुमन की माल गले में चुनरी लाल सुहात है॥
कान में कुंडल नाक नथुलिया शोभा निराली मात की ।
आओ भक्तों ....

शक्ति रूप जगदम्ब भवानी प्रकटी कष्ट निवारने ।
लोहासुर का नाश किया माँ दुख भक्तों का टारने ॥
भक्त बहोरा जबही पुकारे माँ दर्शन के कारने ।
देकर दर्शन उसे उबारा रक्खा अपने सामने ॥
केदारगिरी संग चौपड़ खेली, कन्या बन कर सात की।
आओ भक्तों ....॥

यदुवंशिन कुल पूज्य भवानी मान्य करोली राज की ।
कन्या बनकर कंस छला यह कथा कृष्ण अवतार की ॥
चन्द्र वंश की रक्षा खातिर इष्ट बनी परिवार की ।
गिरी त्रिकूट पर आन बिराजी पूजा गिरी केदार की॥
कष्ट कटे सब उसी भक्त के जिसने माँ की जात की ।
आओ भक्तों .... ॥

कलि से पीड़ित मानव देखा जब जगदम्ब भवानी ने ।
बियावान जंगल में प्रकटी सत्य करी निज वाणी ने ॥
दानव मारे भक्त उबारे कैला कष्ट नसानी ने ।
देखो मात कि झाँकी मनोहर सफल करो जिन्दगानी ने ।
धन्य जन्म नरतन धार जिसने माँ कैला की जात की ।
आओ भक्तों ....॥

पूरब में कालीसिल बहती जाती पश्चिम की ओर है ।
परिक्रमा मंदिर की दे रही कल कल करती सोर है ॥
सुन्दर घाट बने बहुतेरे सिड्डी बनी विशाल हैं ।
मिलकर नहाते नर और नारी करते खूब किलोर हैं ॥
घाट घाट पर बने शिवालय पिण्डी भोले नाथ की ।
आओ भक्तों ....॥

उत्तर मदन मोहन का मंदिर शहर करौली धाम है ।
पाँच नदी का संगम जहाँ पर फैला जग में नाम है ॥
छः दरवाजे बारह खिड़की छोटा सा ब्रज धाम है ।
रजवाड़े की यह रजधानी जंगल घोर तमाम हैं ॥
महाराज गोपाल की छतरी झाँकी अंजनी मात की ।
आओ भक्तों ....॥

केदार गिरी की गुफा देख लो दक्षिण जंगल बीच है ।
बियावान जंगल के अन्दर सिंह भेडिये रीछ हैं ॥
पानी यहाँ पर कभी न सूखे भरा जो कुन्डी बीच है ।
गो मुख से अविरल जल धारा रहति गुफा को सींच है ॥
तपो भूमि यह योगी राज कि भक्ति कि जिन मातकी ।
आओ भक्तों ....॥

देखो भक्त बहोरा ठाड़े आगे लाँगुर वीर है ।
गौरि सुत की झाँकी सुन्दर हरती सब की पीर है ॥
स्वर्ण कलश चाँदी का खम्भा ध्वज वासन की भीर है ।
जगह-जगह पर प्याऊ देखो शीतल जिनका नीर है ॥
कंसल भवन राम मन्दिर में सुविधा सब ही बात की ।
आओ भक्तों ....॥

दाना दह बीजासन मंदिर सिल पर माँ के खोज है ।
बरवासन ओर मात गुमानो फतेहसिंह का ओज है ॥
बड़ी धर्मशाला को देखो बना चोक में हौज है।
नटनी की छतरी दुर्गासागर पुरा तत्व की खोज है ॥
"अन्नपूर्णा" भोजन कर लो सस्ती थाली भात की ।
आओ भक्तों ....॥

चैत्र मास का महिना देखो भीड़ बहुत ही भारी है ।
जगह-जगह पर सुविधा सारी ट्रस्ट ने संभारी है ॥
कनक दण्डवती पैदल चलकर आते नर और नारी हैं ।
झूले, सर्कस और सिनेमा कुँआ मौत भयकारी हैं॥
जोगिनियाँ संग लाँगुर नाँचे बजा बजा कर थाप की ।
आओ भक्तों .... ॥

खूब दुकानें सजी देख लो चौ तरफा बाजार है ।
लहँगा चुन्नी ध्वजा नारियल सजे भोग के थार हैं ॥
खेल खिलौना मालाकंठी फोटो की भरमार हैं ।
ठंडा मीठा चाय पकौड़ी लस्सी भी तैयार हैं ॥
मनिहारी दुकान सजी हैं चूड़ी हरी सुहाग की ।
मूलसिंह बुकसेलर बेचते तस्वीर और पुस्तक वन्दना प्रकाशन की ।
आओ भक्तों .... ॥

ट्रस्ट बना मंदिर का ट्रस्टी कृष्ण पाल जी महाराज हैं ।
जिनकी देख रेख में चलता मंदिर का सब काज है ॥
सुविधा सब ही तरह की देखो साफ सफाई साज है ।
"गिरधारी सिंह" करते निगरानी "सरदार सिंह" साथ है ।
महा प्रबंधक लाल साहब हैं सब पर करुणा मात की
आओ भक्तों .... ॥

माता सुनलो विनय हमारी हम अरदास लगाते हैं
द्वार खड़े सब हाथ जोड़कर चरणन शीश झुकाते हैं
सिंह सवारी मात पधारो दर्श आपके चाहते हैं
आस आप की महर करो माँ भेंट भवानी गाते हैं
मूल सिंह कर जोड़ मनाता दया दृष्टि हो मात की
आओ भक्तों तुम्हें दिखावे झाँकी कैला मात की ।

श्री कैला चरित्र शतक

1. जय कैला कल्याणी माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।
   चामुण्डा दुष्टन की घाता । सुमरत सकल कष्ट कटि जाता ।जय..॥
2. जय जय कैला माँ कल्याणी । जगत मात सर्बग्य भवानी ।
   "मूल" चरण में शीश नवाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥

3. कैला माँ का चरित मैं गाऊँ । लय मनिका मैं तुम्हें सुनाऊँ ।
   ध्यान लगा अब सुमरू माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
4. आदि शक्ती जगदम्ब भवानी । कैला रूप में माँ प्रगटानी ।
   गिरी त्रिकूट पर कीना वासा । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
5. मनिका में सब चरित्र बखाना । जो कुछ पढ़ा सुना निज जाना ।
   वह सब तुमको "मूल" बताता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
6. माँ कैला की मूल कहानी । प्रेम सहित जो पढ़ता ज्ञानी ।
   सुख सम्पती जी भरकर पाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
7. बीहड़ वन में ग्राम लोहरा । तह प्रकटा दानव वर जोरा ।
   मानव मकर पकड़ वह खाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
8. दुःखी भये सब ग्राम निवासी । छाई सब जन बीच उदासी ।
   कैसे मरे दुष्ट दुःख दाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
9. केदार गिरी ढिंग पहुँचें जाई । रो रो कर निज विपती सुनाई ।
   मेटो कष्ट हमारे माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
10. योगी जी ने ध्यान लगायो । लोहासुर ने इन्हें सतायो ।
    हने दुष्ट को जग की माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
11. केदार गिरी ने सब समझाये । हिंग लाज तप हेतु सिधाये ।
    हो प्रसन्न तब प्रगटी माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
12. अद्‌भुत छटा मात की देखी । योगीराज गति भई अलेखी ।
    माँग माँग वर बोली माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
13. योगी राज ने विनय सुनाई । लोहासुर की बात बताई ।
    चलो दुष्ट को मारो माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
14. मारू दुष्ट को जल्दी आई । पहुँचों तुम निज आश्रम जाई ।
    योगी राज से बोली माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
15. कन्या रूप माता ने धारा । लोहासुर को जा ललकारा ।
    बाला देख असुर मुस्काता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय...॥
16. दुष्ट हँसा फैलाकर हाथा । अभी पकड़ कर इसको खाता ।
    मानव माँस मुझे अति भाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय...॥
17. माता बोली तब हर्षाई । तुझे खोजती यहाँ पर आई ।
    अब न बचे तू मेरे हाथा । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
18. रूप कराल मात ने धारा । सिंह के ऊपर भई सवारा ।
    भागा दानव प्राण बचाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय...॥

19. गिरी ते कूद नदी के तीरा । मात खड़ी लेकर शमसीरा ।
चरण चिन्ह सील पर पड़ जाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय..॥
20. असुर सिंह ने धरनी गिरायो । माता ने त्रिशूल चलायो ।
मरा दुष्ट हा हा चिल्लाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
21. राक्षस मार योगी ढिंग आई । माता ने सब दिया बताई ।
अब मैं जा रही बोली माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
22. हाथ जोड़ योगी जी ठाडा । नैनन नीर बहे अती गाढ़ा ।
मुझे छोड़ अब मत जा माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
23. प्रसन्न हुई माँ सुनकर बानी । योगी राज ढिंग रही भवानी ।
खेलती नित प्रति चौपड़ पासा । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
24. बहोरीपुर का भक्त बहोरा । गुर्जर जाति का था वह छोरा ।
जंगल में ही अजा चराता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
25. गिरी जी ढिंग एक दिन सो आयो । योगी राज को वचन सुनायो ।
मुझ पर कृपा करे कब माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
26. केदार गिरी तब कहा बुझाई । देगी दर्शन कैला माई ।
रहो मात के लाँगुर गाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
27. जंगल में वह अजा चराता । माता का नित ध्यान लगाता ।
नाच नाच कर लाँगुर गाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
28. अविरल प्रेम भक्ती माँ देखी । प्रगट भई लखी प्रीत विशेखी ।
सनमुख खड़ी मात मुस्काता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
29. एकटक रहा निमेशन लावही । दोउ कर जोड़े शीश नवावहीं ।
चरणन गिरा बहुत विलपाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
30. तुरत मात ने लियो उठाई । माँग माँग वर कहा समझाई ।
मैं क्या माँगू तुमसे माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
31. मात आपके दर्श अलौकिक । हर दम रहूं देखता एक टक ।
वियोग तुम्हारा सहा न जाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
32. माता पुनि बोली मृदु वाणी । भक्त वत्सलता हिय हुलसानी ।
पूर्ण करूँ मैं तेरी आसा । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
33. पंच भूत यह देह तिहारी । मम दर्शन से गई संसारी ।
कर्म भोग सब छूटे ताता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
34. जब यह देह तजो संसारी । मम संग पूजा होय तिहारी ।
सनमुख मेरे रहिहों ताता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥

35. मम सनमुख रहे तुमरी प्रतिमा । फैले जग में मम संग महिमा ।
रहो प्रेत की खोर हटाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
36. सदा बहोरा सनमुख रहता । हर दम माँ के दर्शन करता ।
दे वरदान गई तब माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
37. योगी राज संग मात गुफा में । शक्ति की नित महिमा गायें ।
भक्त मात को कथा सुनाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
38. एक दिन योगी जी के पासा । खेल रही माँ चौपड़ पासा ।
चोटी से जल दीखा आता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
39. योगीराज मन करे विचारा । कहाँ से आई यह जल धारा ।
माँ की महिमा समझ न पाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
40. केदार गिरी तब बोले वाणी । माता कहाँ से आ रहा पानी ।
बोली माँ मत पूछ ये बाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
41. जो हो सब तुम रहो देखने । चरित अलौकिक बड़े एकते ।
धरा नहीं कुछ इनमें ताता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
42. केदार गिरी ने तब हट ठानी । मात बात यह पड़े बतानी ।
दास तुम्हारे जोड़े हाथा । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
43. बोली तब मुस्काय भवानी । भक्त राज यह सागर पानी ।
हट छोड़ो मत पूछो बाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
44. बात राज कि गर मैं खोलूं । फिर सन्मुख रहू न बोलूं ।
गर मन्जूर तुम्हें यह बाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
45. भावी बस गिरी गये भुलाई । हाँ कह माता दे ओ बताई ।
भक्त वत्सला बोली माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
46. वणिक भक्त कि नाव बचाई । सोई जल धार जटा में आई ।
भई अदृश्य यह कहकर माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
47. केदार गिरी जी रहे पछताई । माता मेरी भई पराई ।
त्राही त्राही माँ जन सुखदाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
48. धरणी गिरे गिरी मुरछा आई । गुफा माझ भई गिरा सुहाई ।
योगी राज अब क्यों पछताता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
49. धीर धरो योगी मन माहीं । मूर्ति रूप अब मुझे तुम पाहीं ।
यती वृषभ पर लावे बिढाता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥
50. प्रतिमा मेरी गिरी पर धरना । थान बना नित पूजा करना ।
नाम हो मेरा कैला माता । संकट हरणी सब सुख दाता ।जय...॥

51. मूर्ति रूप में दर्शन दैहो । तब मैं नित तुमरे ढिंग रहिहो ।
भक्त सुनो यह मेरी बाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
52. श्रवण सुधा सम गिरा सुहाई । योगीराज के मन को भाई ।
बोले धन्य धन्य हे माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
53. सुनत वचन मिट गये सब दूखा । तृषा वंत जिमी पाथ पियूषा ।
उठ बैठे योगी हर्षाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
54. जन जन माँ तुम्हें पुकारा । केही विधि होय जगत उपकारा ।
कलि कष्टो से मिले निजाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
55. ऐही विधि गये कछुक दिनी बीती । मात चरण नित बढ़ती प्रीति ।
जंगल में भये मंगल ताता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
56. विधर्मी एक हुआ तेही काला । सुर मंदिर सबकी ये बेहाला ।
प्रतिमा माता सुन्दर जहाँ भी पाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय. ॥
57. प्रतिमा फोडकर खण्डित करता । मंदिर को वह मस्जिद रचता ।
मूर्ति पूजा चला मिटाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
58. हिमाचल गिरी राज शिखर पर । माँ का मंदिर बना जहाँ पर ।
दर्शन नित जन तहँ आता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
59. योगी राज वहाँ के महन्ता । तिन के दिल में व्यापी चिन्ता ।
प्रतिमा कैसे बचेगी माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
60. योगी को स्वप्न मात ने दीना । मूर्ति वृषभ पर धर चल दीना ।
पन्द्रह दिन तक चला दुवाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
61. निस दिन चला योगी मन लाई । गिरी त्रिकूट पर पहुँचा आई ।
जंगल बीहड़ देख सुहाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
62. प्रतिमा गिर पर तब रखदीना । नहाय धोय नित पूजा कीना ।
जान निसा योगी सो जाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
63. प्रात काल नित क्रिया कीना । मात चरण में बिनती कीन्हा ।
लगा उठावन हिली न माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
64. इत उत देखत योगी राजा । नजर कोई भी तहा न आता ।
हो निराश बैठा घबराता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
65. उधर गुफा में गिरी को माता । स्वप्न दिया मैं आगई ताता ।
योगीराज को लेकर साथा । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
66. अब तुम मिलो संत से जाई । मम प्रतिमा तहँ देओ पदराई ।
रहूंगी में अब वही पर ताता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥

67. केदार गिरी योगी ढिंग सुहाई । नमो नमो कर गिरा सुनाई ।
योगी चरणन शीश झुकाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
68. योगीराज निज कथा सुनाई । गिरी जी को है सकल सुनाई ।
केदार गिरी सुनकर हर्षाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
69. रात स्वप्न की सारी बाता । योगी जी गिरी को बतलाता ।
अब नहीं जैई है कही पै माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
70. गिरी जी ने ग्रामीण बुलाई । प्रतिमा माँ कि तहाँ पदराई ।
बोलो सब मिल जय जय माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
71. गुसाई जी नित पूजा करते । दुखी जनों के दुख सब हरते ।
चहुँ दिशि कैला भई विख्याता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
72. चैत्र मास को एकम नवरात्रा । नरनारी सब आये जाता ।
किया मात का मिल जगराता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
73. लोहर्रा के सुख देव पटेला । तिन के तन प्रवसि माँ कैला ।
सब मिल बोले जय जय माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
74. एही विधी सुखी भये नर नारी । चैत्र में जात जुडे अति भारी ।
देश देश से जात को आता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
75. गागरान के खींची राजा । बादशाह हुए तिन पर नाराजा ।
माँ ढिंग आया नृप घबराता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
76. माँ कैला सों विनय सुनाई । मम सुत को अब लेओ बचाई ।
करूं मात तेरा जगराता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
77. सुत की फाँसी माता काटी । बादशाह कि तोपे नाटी ।
राजकुमार देखा कुशलाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
78. चंद्रवंश के अर्जुन देवा । माँ कैला कि कीनी सेवा ।
करौली दुर्ग की नींव रखी निज हाथा । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
79. माँ कैला और चामुण्डा । दोनों थापी नृप एक संगा ।
कुल देवी कर पूजी माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
80. राजा को माँ सपना दीना । अपना चरित बता सब दीना ।
रहूँ मैं तुमरे कुल के साथा । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
81. राजा ने तब भवन बनायो । नित पूजन को नियम चलायो ।
ज्योति जलाई दिन और राता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
82. माता ने बहु चरित दिखाये । निज भक्तन के प्राण बचाये ।
जो कोई मात शरण में आत । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥

83. चमत्कार माता अति कीना । विप्र सुमन को जीवन दीना ।
बैठा हुआ बाल इठलाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
84. विपदा एक राजा पर आई । माता को सब विनय सुनाई ।
मेरी विपत भई कुशलाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
85. जहाँ तहाँ नृप ने करी चढ़ाई । माता ने सब जीत दिलाई ।
फौज के आगे चलती माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
86. ब्राह्मण सुत एक मंदिर आया । माता ने उसको अपनाया ।
कलश में कद्दू भरा सुहाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
87. कारज सबके करे भवानी । महिमा मात की सबने जानी ।
बलिदान करो निज मद का भ्राता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
88. माता से जो करे याचना । पूरी करती मात कामना ।
ऋणिया मुक्ती ऋण से पाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
89. आदी शक्ती अवतार अनूपा । धरे भक्त हित नाना रूपा ।
शैल पुत्री तुम गणपति माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
90. ब्रह्मचारिणी तुम महामाई । मात चन्द्र घटा कह लाई ।
चौथी तुम कुष्मान्दा माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
91. स्कन्ध मात हो तुम्हीं भवानी । कालरात्री तुम्हीं कल्याणी ।
महागौरी तुम जग विख्याता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
92. माँ चामुण्डा हो बल शाली । मातंगी अरु जयन्ती काली ।
दुर्गा जय दुष्टन कि घाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
93. शिवा धात्री मात आनन्दा । काटत भक्तन के भव भय फन्दा ।
स्वाहा सुधा मंगला माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
94. केली करन करोली आई । तेही ते कैला माँ कहलाई ।
लांगुरिया संग मन को भाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
95. चन्द्र वंश भये भूप गोपाला । भवन मात का आप सँभाला ।
दर्शन तिनको देती माता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
96. भूप भँवर भये भक्त सुजाना । माता के करते गुण गाना ।
चलते रख सिंहन पर हाथा । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
97. कृष्ण चन्द्र पाल यदुकुल के चन्दा । मात कृपा से सर्वानन्दा ।
मंदिर माँ का किया विख्याता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
98. 'महा शक्ति' ललकार लगाई । मूल सिंह को राह दिखाई ।
किया हृदय में गयान प्रभाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
99. कलियुग में कल्पतरू है माता । जो कोई मात शरण में आता ।
ताके सिर पर रखती हाथा । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥
100. पूरण की मुक्ता की माला । पाठ करे जन होय निहाला ।
हाथ जोड़ कर शीश नवाता । संकट हरणी सब सुखदाता ।जय... ॥

Kailadevi Apr. 2011

घर बैठे वी.पी. द्वारा पुस्तकें मंगवायें

(सचित्र)

पुस्तक में पेन्सिल पकड़ने से लेकर घरेलू वस्तुएं पेड़, पत्ती, फल–फूल, पशु–पक्षी, मनुष्य, शरीर बाल–बालिकाएं, सीन–सीनरी, हिन्दी–इंगलिश के तरह–तरह के अक्षर बनाना बताया गया है। पुस्तक की सहायता से कम पढ़े–लिखे व्यक्ति थोड़े दिनों के अभ्यास से आर्टिस्ट व पेण्टर बन कर हजारों रुपये महीना पैदा कर सकते हैं। मूल्य रु. 50/–

यंत्र सूर्य कलामय

हर मानव नास्तिक या पढ़ा–बेपढ़ा, गरीब–अमीर, स्त्री–पुरुष सभी की कुछ न कुछ भौतिक इच्छाएं होती हैं जो कि पूरा होना ही उन्हें असंभव दिखाई देता है। उन्हीं सब बातों को संभव बनाना ही इस पुस्तक में यंत्रों के रूप में दिया गया है जिनको करने से प्राणी मात्र की सभी इच्छाएं पूरी हो सकें। इस पुस्तक को अधिक परिश्रम से तैयार करने वाले तांत्रिक नागा बाबा श्री पीतमदास जी हैं। मूल्य रु. 60/– पहले 10% पेशगी एम.ओ. भेजने पर रु. 50/– की वी.पी.पी. भेजी जायेगी। डाकखर्च माफ।

वी.पी.पी. द्वारा पुस्तकें मंगाने का पता

श्री वन्दना बुक डिपो

चौक, गुड़हाई बाजार, मथुरा-281001

- पुस्तकें मंगाने के लिये पुस्तक का नाम, मूल्य व अपना पूरा पता साफ-साफ लिखें। वी.पी.पी. खर्च अलग से देय होगा
- मनीआर्डर द्वारा रु.20/– रु.30/– पेशगी बतौर भेजने पर बाकी रकम की वी.पी.पी. भेजी जायेगी।